वर्ष : 2019-20

धरा गुर्जरी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) गुजरात
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) अहमदाबाद

महाबत मकबरा

महाबत मकबरा गुजरात के जूनागढ़ ज़िले में एक शानदार महल-मकबरा है। यह इंडो-इस्लामिक, यूरोपीय और गॉथिक वास्तुकला का एक असाधारण संयोजन है, और शहर के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में से एक है।

यह जूनागढ़ के नवाब महाबत खान द्वितीय के दरबार के वज़ीर बहादुद्दीनभाई हसनभाई के मकबरे के रूप में बनाया गया था। इस का निर्माण कार्य 1878 में शुरू हुआ और 1892 में पूरा हुआ।

यह संरचना अपेक्षाकृत पारंपरिक है, जिसमें एक केंद्रीय गुंबददार हॉल है और चार कोनों पर चार मीनारें हैं। प्रत्येक मीनार में बाहर की ओर विपरीत दिशाओं में बनी सर्पनुमा सीढ़ियां हैं जो इस इमारत को सममिति प्रदान करती हैं।

इसमें कई छोटे गुंबद, पतले-पतले मेहराब, फ्रेंच खिड़कियां, ऊर्ध्वाधर गॉथिक कॉलम और चमकदार चांदी के दरवाज़े बने हुए हैं। इमारत के अंदर और बाहर की दीवारें पत्थर पर की गई बारीक नक्काशी से सजी हुई हैं।

धरा गुर्जरी

वर्ष: 2019-20

संरक्षक:

श्री एच. के. धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

श्रीमती प्रीति अब्राहम, प्रधान निदेशक

संपादक मंडल:

श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

श्री जितेंद्र कश्यप, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

श्री राज कुमार सिंघल, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

श्री प्रशांत शुक्ला, वरिष्ठ लेखा परीक्षक

संपादकीय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद के कार्यालयों की संयुक्त हिन्दी पत्रिका का 2019-20 का अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। गुजरात में स्थित हमारे कार्यालयों की हिन्दी पत्रिका को स्थानीय कलेवर देते हुए इस वर्ष से “आरोहण” के स्थान पर “धरा गुर्जरी” नाम से प्रकाशित किया जा रहा है।

पत्रिका के इस अंक में जहां एक ओर महिला सशक्तीकरण तथा पर्यावरण संबंधी लेख सम्मिलित हैं वहीं दूसरी ओर हास्य-व्यंग्य, संस्मरण तथा भाषा से संबन्धित लेख भी हैं। साथ ही एक वैज्ञानिक लेख तथा समसामयिक विषयों से संबन्धित लेखों तथा कविताओं ने इस पत्रिका को विविधता प्रदान की है।

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वरचित रचनाएँ ही इस पत्रिका में सम्मिलित की गयी हैं। मात्र स्वरचित कृतियों को हिन्दी पत्रिका में सम्मिलित करने की परंपरा वर्ष 2017-18 के अंक से प्रारम्भ हुई। लगातार तीसरे वर्ष भी हम इस परंपरा का पालन सम्यक रूप से कर पा रहे हैं। अब समय है पत्रिका को स्वरचित कृतियों वाली एक स्तरीय हिन्दी पत्रिका के रूप में स्थापित करने का। उद्देश्य यह है कि जब कोई भी पाठक इसे पढ़े तो उसे यह स्तरीय एवं सुरुचिपूर्ण लगे।

संपादक मण्डल कार्यालय के सदस्यों का आह्वान करता है कि स्तरीय स्वरचित रचनाएँ प्रदान करके ‘धरा गुर्जरी’ के स्तर की गुणोत्तर वृद्धि में सहयोग करें। संपादक मण्डल सभी पाठकों का आभारी है जिन्होंने समय-समय पर हमें अपने प्रतिभाव भेज इस पत्रिका को निरंतर बेहतर बनाने में सहयोग दिया है। आशा है, आप सभी पाठकों का सहयोग यथावत अनवरत मिलता रहेगा।

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
1	मेरा गुजरात का अवस्थान	सुश्री वाणी श्रीराम, अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक	संस्मरण	1-10
2	स्वयं का उपग्रह स्टेशन स्थापित करें	श्री अजय शुक्ल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	11-16
3	हर इंसान कुछ कहता है	सुश्री अनीता सिंह, वरिष्ठ उप महालेखाकार	कविता	17-18
4	गांधीजी का 'जंतर'	श्री अनिल बेनीवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	19-21
5	इसरो में चंद्रयान 2 की लैंडिंग को देखने का अनुभव	सुश्री अनुष्का अग्रवाल, सुपुत्री श्री नितिन अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	संस्मरण	22-25
6	ख़्वाब	श्री अभिजीत आनंद, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	26
7	ये पीले पड़ जाते पत्ते	श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक	कविता	27
8	क्या पुरुषत्व मानवता से भी प्रबल है?	श्री अमन दीप, बहु-कार्य कर्मचारी	लेख	28-29
9	मेरे निश्छल दोस्त	श्रीमती कुसुम लता, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	कविता	30-31
10	जीवन की व्यथा क्या बोलूँ मैं	श्री चिंटू गुप्ता, लेखापरीक्षक	कविता	32
11	है पिता भी एक इंसान, कोई भगवान नहीं	श्री जितेंद्र कश्यप, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	33
12	अनजान मददगार	सुश्री धनवंती टिब्बानी सिसोदिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	संस्मरण	34-35
13	हिंदी भाषा	सुश्री नूपुर राजेश तिवारी, पत्नी श्री राजेश चन्द्र तिवारी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	36-37
14	हे मानव	श्री नरेश सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	38-40
15	संविधान... हमारी पहचान	श्री निहारिका उप्पल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	41-42
16	चल देना	श्री निहारिका उप्पल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	43-44
17	पर्यावरण नैतिकता	श्री प्रकाश महावर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	45-47
18	बेटी	श्री प्रदीप कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	48

19	कार्यालय में टेबल टेनिस टूर्नामेंटों का आयोजन	श्री पवन सिंगला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं श्री कुशल संगतानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	लेख	49-51
20	पहला कदम	श्री प्रवीण कुमार झा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	52-53
21	निःस्वार्थ सेवा	श्री प्रवीण कुमार सिसोदिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	54-55
22	माँ	श्री प्रशांत शुक्ला, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	56-57
23	मैं बेटी हूँ मुझे बेटी ही रहने दो	श्री बिनय कुमार, बहु-कार्य कर्मचारी	कविता	58-59
24	सरकारी मधुमक्खी का छत्ता	श्री मौलिक पटेल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	60-64
25	फ़लसफ़ा	श्रीमती मल्लिका मुखर्जी, से.नि. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	65
26	न्यू प्रकाश सर्कस	श्रीमती मल्लिका मुखर्जी, से.नि. वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	संस्मरण	66-69
27	हां ये ही है समानता	श्री मनोज झा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	कविता	70-71
28	चल रही हैं हवाएँ, पर साँसें महसूस नहीं	श्री मृगेश नकुम, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	72
29	ईज़ी है ना	सुश्री याशिका सिंगला, सुपुत्री श्री पवन सिंगला, हिंदी अधिकारी	कविता	73-75
30	लॉकडाउन की शाम पर्यावरण के नाम	श्री रवि कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	76-77
31	ज़िंदगी	सुश्री विद्या अय्यर, पर्यवेक्षक	कविता	78
32	21वीं सदी में गांधी जी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत की प्रासंगिकता	श्रीमती वीना यादव, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	लेख	79-83
33	न भेजो तुम वृद्धाश्रम	श्री विश्वपति सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	84-86
34	छोटा मुंह बड़ी बात	श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	लेख	87-88
35	ज़िंदगी की तलाश में	सुश्री सुनीता शॉ, बहु-कार्य कर्मचारी	लेख	89-90
36	पहला प्यार	श्री सुनील कुमार छेडवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	91-92
37	सिक्का	श्री हर्षित पांडे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	93
38	कार्यालय में आयोजित	श्री पवन सिंगला,	लेख	94-96

	रंगोली प्रतियोगिता, एवं “जॉय ऑफ गिविंग” कार्यक्रम की एक झलक	हिंदी अधिकारी एवं श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक		
39	मुकेश के नग़मे	श्री एच. के. धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार	लेख	97-100

इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है। रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाशन सहयोग:

1. श्री पवन सिंगला, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-II) गुजरात, अहमदाबाद
2. श्री ज्ञानभूषण सिन्हा, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद
3. श्री अजय कुमार शुक्ल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4. श्री अभिषेक कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
5. श्रीमती कुसुम लता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
6. श्रीमती निशा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
7. श्रीमती वीना यादव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
8. श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
9. श्री चिंटू गुप्ता, लेखा परीक्षक

मेरा गुजरात का अवस्थान

वाणी श्रीराम
अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मध्य क्षेत्र)

फ़रवरी 2013 में श्रीराम की नियुक्ति फ़्रांस में हुई। हैदराबाद कार्यालय में एक भव्य विदाई समारोह हुआ। कार्यालय के सदस्यों ने हमें द्वारिकाधीश की एक सुंदर छवि भेंट की। आंध्र प्रदेश में प्रायः बालाजी की छवि या प्रतिमा भेंट दी जाती है। इसलिए इस छवि का भेंट रूप में मिलना ज़रा हट के था, लेकिन हमने उसे संभाल कर रख दिया और उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

फ़रवरी 2018 में मेरी और श्रीराम की नियुक्ति गुजरात में प्रधान महालेखाकार के पद पर राजकोट में हुई। राजकोट कभी भी नियुक्ति के लिए हमारा पसंदीदा विकल्प नहीं रहा तथा गुजरात कभी हमारे विकल्पों में नहीं रहा क्योंकि हम दक्षिण भारत में पहले से रिक्त या भविष्य में रिक्त होने वाले पदों पर नियुक्ति के इच्छुक थे। इसलिए, राजकोट में हमारी नियुक्ति से हमें आश्चर्य हुआ। लेकिन अब जब उसके बारे में सोचती हूँ तो मुझे लगता है कि द्वारिकाधीश की छवि का भेंट रूप मिलना, मानो कोई दैवीय संकेत था। मेरा यकीन है कि देवी माँ बेहतर जानती हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है।

अहमदाबाद, सूरत और वड़ोदरा के बाद राजकोट, गुजरात का चौथा सबसे बड़ा शहर है। यह गाँधीजी की स्कूली शिक्षा के स्थान के तौर पर तथा सुन्दर पटोला साड़ियों के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। सौराष्ट्र क्षेत्र का मुख्य शहर तथा केन्द्र बिन्दु होने के कारण यह द्वारिका तथा सोमनाथ के प्रसिद्ध तीर्थस्थानों का प्रवेश द्वार भी है। सौराष्ट्र क्रिकेट संघ भी यहीं है जिसे गुजरात में क्रिकेट का पालना मानते हैं और जिसने जाम रणजी, दिलीप सिंहजी और वीनू मांकड़ जैसे भारत के कुछ महान क्रिकेटरों को जन्म दिया।

हमने राजकोट में 15 मार्च 2018 को कार्यभार ग्रहण किया। हालाँकि नौ महीने के भीतर ही दिल्ली में श्रीराम के पदस्थापन का आदेश जारी हो गया, लेकिन इस दौरान हमने गुजरात में जो भी देखा तथा अनुभव किया, वह बहुत ही मनभावन तथा आनंदमय रहा। इस छोटे से अंतराल में हम स्थानीय भाषा तथा व्यंजनों से तो परिचित हुए ही, हमें इस जगह से लगाव भी हो गया।

जब मैं और श्रीराम अपने आस-पास की सभी चीजों के बारे में भावुक हो रहे थे, तब मैं खुद से ही पूछ रही थी कि वास्तव में वह कौन सी बात है जो हमें इस जगह के बारे में पसंद है? इस प्रश्न का उत्तर जो मैंने अपने आप को बताया वह यह है:

गुजरात सचमुच में भाग्यशाली है, यह वह स्थान है जहाँ सौराष्ट्र के द्वारिका को भगवान श्री कृष्ण ने देश के अन्य स्थानों को छोड़कर अपना निवास बनाने के लिए चुना। उन्होंने अपने अवतार का अंत भी सौराष्ट्र के बाल्का में किया। भगवान शिव स्वयं 12 ज्योर्तिलिंगो में से प्रथम (आदि) लिंग के रूप में सोमनाथ में सोमेश्वर महादेव तथा गुजरात के सौराष्ट्र में नागेश्वर में दसवें ज्योर्तिलिंग के रूप मे प्रकट हुए। भावनगर के समुद्र में निष्कलंक महादेव के मंदिर के बारे में यह मान्यता है कि अपने भाइयों की हत्या के पाप से मुक्ति के लिए प्रायश्चित करने के बाद पांडव यहीं विशुद्ध हुए थे। कच्छ में अरब सागर के किनारे कोटेश्वर महादेव, नारायण सरोवर तथा माँ आशापुरा देवी, वड़ोदरा में कायावरोहण शिव, जूनागढ़ मे भवनाथ महादेव, बनासकाँठा में अंबाजी, इस क्षेत्र के लोगों की आस्था के साक्ष्य हैं।

गुजरात की प्रारम्भिक भक्ति आंदोलन में भी गहरी जड़ें रह चुकी हैं। 12वीं सदी के, वैष्णव परम्परा के प्रचारक स्वामी चक्रधर से लेकर जलाराम बापा जिनके अच्छे कार्यों का आज भी हज़ारों भक्त अनुसरण करते हैं, तथा स्वामीनारायण के रूप में लोकप्रिय सहजानन्द स्वामी जिनके उपदेशों का अनुसरण लाखों लोगों

द्वारा किया जाता है, यह राज्य सब का घर बना। विश्व भर में फैले लगभग 1300 स्वामीनारायण मंदिर अपनी सुन्दरता, शांति, अनुशासन तथा रखरखाव के लिए विख्यात हैं तथा आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा मानवतावादी गतिविधियों के केंद्र के रूप में सेवा प्रदान करते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के बारे में सोचे बिना गुजरात के बारे में कोई नहीं सोच सकता। गांधीजी का जन्म सौराष्ट्र के पोरबंदर में हुआ तथा उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा राजकोट में प्राप्त की। उनका जीवन-उपदेश व उनसे जुड़ी हुई विभिन्न वस्तुएँ साबरमती नदी के किनारे पवित्र साबरमती आश्रम में संरक्षित हैं, जहाँ वो 1917-30 के दौरान रहे तथा भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। इनमें से बहुत सी वस्तुओं को पोरबंदर स्थित उनके घर तथा राजकोट में नवनिर्मित गाँधी संग्रहालय में प्रदर्शन के लिए रखा गया है।

गुजरात, भारत में इकलौता ऐसा स्थान है जहाँ सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष तीन स्थलों, लोथल, धौलावीरा तथा गोलाधोरो में पाए जाते हैं। लोथल, हड़प्पा युग के दौरान एक विशाल एवं महत्वपूर्ण बंदरगाह था। इसकी खोज 1954 में की गई तथा 1955-1960 तक पाँच वर्षों तक यहाँ खुदाई की गई। धौलावीरा कर्क रेखा पर स्थित है तथा हड़प्पा युग का पाँचवां मुख्य नगर (आठ में से) माना जाता है। इसकी खोज 1967-68 में हुई तथा यह 1990 तक उत्खनन के अंतर्गत रहा।

गुजरात के गीर राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभ्यारण्य में एशियाई शेर पाये जाते हैं। सासण गीर, जूनागढ़ से करीब 65 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह जूनागढ़ के नवाब का शिकारगाह था। यह एक संरक्षित क्षेत्र है तथा यहाँ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां तथा जीव-जन्तु पाये जाते हैं। 2015 की गणना के अनुसार, इस अभ्यारण्य में 523 शेर थे। मार्च 2018 में हमने अभ्यारण्य भ्रमण के

दौरान लगभग 15 शेरों को देखा, हालांकि शुरुआती गर्मी के दिनों मे सभी सुस्त दिख रहे थे!

गुजरात समृद्ध एवं वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत वाला राज्य है। यह संस्कृतियों,

रंगों , शिल्प, मेलों, त्योहारों, कला तथा वास्तु कला का जीवंत मिश्रण है। यह राज्य आभूषणों, फर्नीचर, कशीदाकारी वस्त्रों, शीशे का काम, धातु का काम, सुन्दर पटोला साड़ियों, शानदार बंधेज, रंग-बिरंगे घाघरा-चोली, कोट, बेडकवर इत्यादि का केंद्र है। कच्छ क्षेत्र की कला तथा संस्कृति बहुत ही विशिष्ट है तथा इसके पारम्परिक परिधान मन को मोहने वाले हैं।

आमतौर पर गुजराती और विशेष तौर पर सौराष्ट्र के लोग बहुत धार्मिक दृष्टिकोण के होते हैं तथा वे सच्चे मन से “जीवकरुणा” का पालन करते हैं। सामान्य धारणा कि गुजराती पैसों के बारे में सोचने वाले तथा कंजूस होते हैं, के विपरीत वे कई संस्थाओं/ट्रसटों में खुल कर दान करते हैं। कई अन्य एन.जी.ओ./ट्रस्ट जो समाज सेवा को केवल कमाई का एक ज़रिया समझते हैं, से भिन्न जो ट्रस्ट हमने राजकोट में देखे, वे बहुत ही सेवा–केंद्रित हैं तथा सही मायने में संकट में फंसे लोगों व जानवरों की मदद करते हैं और तमाम मुद्दों पर सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए पहल करते हैं। लोग यहाँ जानवरों को परेशान नहीं करते। आवारा कुत्तों को, अल्प आय स्त्रोत वाले लोगों द्वारा भी दूध तथा बिस्किट खिलाए जाते हैं तथा सभी जगह कबूतरों को दाना डाला जाता है। यहाँ गौशालाएँ बहुत ही लोकप्रिय हैं तथा स्थानीय लोगों द्वारा उनकी देखभाल के लिए खुल कर दान दिया जाता है। लोग गाय की पूजा करते हैं तथा उन्हें किसी भी तरह से तकलीफ़ में नहीं देख सकते। गोमांस न खाना उनके सात्विक जीवन जीने के तरीके का विस्तार है। सभी जीवित प्राणियों का आदर किया जाता है जिनमें साँप भी शामिल है।

गुजराती भोजन स्वादिष्ट तथा भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। इसमें थोड़ा सा मीठापन होता है, इसलिए हमें इसकी आदत पड़ने में समय लगा। परन्तु एक बार हमें इसकी आदत पड़ गयी तो उंधियु, भजिया, कढ़ी, दालवड़ा, ढोकला, थेपला, भाखरी, खाखरा, गांठिया, फाफड़ा तथा सभी प्रकार के फरसाण खाने की

तीव्र इच्छा होने लगी। सौराष्ट्र क्षेत्र/काठियावाड के व्यंजन मसालेदार व ज़्यादा तेल वाले होते हैं। हमारी रसोइया कुसुमबेन को हमने मसाले व तेल न डालने के निर्देश दिये क्योंकि अप्पा को इन्हें पचाने में मुश्किल होती। हे भगवान! कितनी तीव्रता से सीख लिया उन्होंने । बहुत जल्दी उन्होंने अप्पा के लिए तमिल व्यंजन जैसे कोट्टू, कुझुहम्बू, सांभर, रसम इत्यादि बनाना भी सीख लिया।

गुजरात के लोग, विशेष तौर पर सौराष्ट्र के (राज्य के अन्य क्षेत्रों के लोगों के साथ हमारा ज़्यादा मेल-जोल नहीं हुआ) सुशील व धार्मिक होते हैं। वे बहुत ही परिवार केन्द्रित होते हैं। अपने परिवार के साथ यात्रा करने व समय बिताने पर उन्हें खुशी होती है। वे हमारी जानकारी के अन्य समुदायों की तुलना मे भोजन के अधिक शौकीन हैं। विशेष तौर पर राजकोट के लोग आइसक्रीम के बहुत शौकीन हैं। रेस कोर्स रोड के इर्द-गिर्द आइसक्रीम पार्लरों की कतारें हैं तथा लोग रेसकोर्स रोड के पार्कों में या राजकोट नगर निगम द्वारा सड़क के किनारे निर्मित सीटों पर बैठकर देर रात तक आइसक्रीम का आनंद उठाते हैं (12.30-1.30 बजे तक या आइसक्रीम पार्लर में आइसक्रीम खत्म होने तक)। हालाँकि वे सुबह राजकोट नगर निगम द्वारा सड़कों के किनारे लगाए गए स्पीकरों के माध्यम से सौम्य, शांतिदायक तथा प्रफुल्लित करने वाले संगीत का आनंद लेते हुए सैर हेतु निकलते हैं।

यहाँ रेसकोर्स रोड पर कल्पना चावला के नाम पर विशेष तौर से महिलाओं के लिए बनाया गया एक बहुत ही सुंदर बगीचा भी है। बहुत सी महिलाएँ इसका सैर, जॉगिंग, ध्यान, पढ़ाई इत्यादि के लिए इस्तेमाल करती हैं। रेसकोर्स रोड पर एक महिला पुलिस स्टेशन भी है। किसी भी स्थिति में सड़कों पर कोई छेड़छाड़ नहीं दिखती है हालांकि फन स्ट्रीट में कभी किसी बेमेल जोड़े को अंतरंग होते देख सकता है, फिर भी सामान्य तौर पर लोग अपने काम से काम रखते हैं।

राजकोट महिलाओं के लिए एक सुरक्षित स्थान है तथा बहुत सी महिलाओं को यहाँ स्कूटर चलाते हुए देखा जा सकता है। हम प्रत्येक सुबह आर.एम.सी. स्टेडियम के सामने कुछ महिला प्रशिक्षकों को देखते थे। लेकिन जिस चीज़ ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया वह यह थी कि जवान लड़कियाँ बिना किसी डर के आधी रात तक भी स्कूटी चलाती हैं। यही सच्चा महिला सशक्तीकरण है। मुझे नहीं लगता कि भारत के किसी अन्य शहर मे लड़कियाँ आधी रात में अकेले घूम सकती हैं। मुझे लगता है कि इसका संबंध इस बात से है कि गुजरात में शराब पर पाबंदी है तथा राजकोट में लोग चुपके-चुपके शराब पीने के तरीके खोजने के ज्यादा इच्छुक नहीं दिखाई देते। उनका झुकाव शराब संबंधी गतिविधियों की बजाय धार्मिक गतिविधियों की तरफ ज़्यादा है।

राजकोट में जुलाई से नवम्बर माह के बीच पाँच महीने का समय हमारे लिए किसी रोलर-कोस्टर से कम नहीं था। इस अवधि में हमारे कार्यालयों में कार्य की उत्पादकता को बनाए रखना कठिन रहा क्योंकि लोग विभिन्न त्योहार मनाने में व्यस्त रहते थे। अधिकांश लोग व्रत रखते हुए दिखाई पड़ते थे तथा छुट्टी लेना चाहते थे। यह मौसम, जुलाई माह में सावन के साथ शुरू होता था जब महादेव शिव को भारत के उत्तर तथा पश्चिम भागों में पूजा जाता है। एक विशाल शिवलिंग को रेसकोर्स रोड पर स्थापित किया गया (और कहाँ किया जाता?)। प्रत्येक शाम को लोगों की भीड़ पंडाल में जमा होती। इसके बाद जन्माष्टमी आई, जिसे पाँच दिन तक पूरे उत्साह के साथ अंतिम दिन भगवान श्री कृष्ण तथा महादेव की विभिन्न मूर्तियों के साथ मनाया गया। फिर गणेश चतुर्थी को पाँच दिन तक विशाल पंडाल, प्रसाद तथा नदी तक 'मूर्ति' की झाँकी यात्रा के साथ मनाया गया। उसके बाद नौ दिन की नवरात्रि, फिर पाँच दिन रोशनी का त्यौहार– दिवाली के बाद गुजराती नव वर्ष और देव-दिवाली आये। हमने इन सब उत्सवों का आनंद उठाया। गुजरात की नवरात्रि देखने लायक है। यह शायद राज्य का सबसे सुंदर त्यौहार है जहाँ पुरुष व महिलाएँ रंग-बिरंगे चणिया-चोली तथा केडिया पहनकर तैयार होते हैं और पूरी रात गरबा तथा डांडिया नृत्य करते हैं। हम इन सब का हिस्सा बनकर बहुत खुश थे। हमने भी हमारे कार्यालय में एक शाम हमारे दोनों कार्यालयों के स्टाफ़ तथा उनके परिवारों के लिए गरबा आयोजित किया। वाह! यह कितना अद्‌भुत था।

दिसम्बर माह में रणोत्सव के दौरान धोरडो में अद्‌भुत टेंट सिटी में ठहरना तथा सफेद रण का भ्रमण, विशेष तौर पर सफ़ेद मरुस्थल पर सूर्यास्त देखना बहुत ही ख़ास था तथा यह हमें बहुत ही प्यारा लगा। कच्छ भारत का सबसे बड़ा ज़िला है तथा एक विशिष्ट स्थान है। यह ख़राब मौसम व पानी की कमी के कारण बहुत ही ख़ुश्क तथा साधनहीन है। यह सर्दी में, वर्ष के दौरान

लगभग– चार महीने ही जीवंत रहता है। कच्छ का रण उथली आर्द्रभूमि है जो वर्षा ऋतु के दौरान पानी में जलमग्न हो जाती है तथा बाकी वर्ष सूखी रहती है। यह क्षेत्र कई मंदिरों, मेलों, हस्तशिल्प, पारंपरिक कपडों (विशेषकर अज़रख), व्यंजनों तथा इसकी स्वयं की कला के लिए प्रख्यात है। भुजोड़ी तथा नीरोणा गाँवों की कला और शिल्प का कार्य बहुत ही सुन्दर है। हमने कई प्रकार की ओढ़नी, शॉलें, साड़ियाँ तथा रोगन कला में अद्‌भुत ‘ट्री ऑफ लाइफ़’ खरीदे।

दिसम्बर 2018 में कच्छ तथा भुज भ्रमण के दौरान हमने कोरी क्रीक के मुख पर लखपत कस्बे का भी भ्रमण किया जो जमादार फतेह ‘मोहम्मद द्वारा 1801 में निर्मित 7 कि.मी. लम्बी किले की दीवार के साथ सटा है। 1819 के भूकंप के दौरान सिंधु नदी ने मार्ग बदल लिया जिसके परिणामस्वरूप महान रण सूख गया। जो अब बचा हुआ है, वह खार का एक विशाल विस्तार है जो किले की दीवार से सुंदर दिखता है। लखपत में प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहिब है जहाँ गुरुनानक जी अपनी मक्का यात्रा के दौरान ठहरे थे। गुरुद्वारा तथा गुरु नानकदेव जी के स्मारक चिन्हों जैसे उनकी चरण पादुकाओं तथा पालकी का रखरखाव बहुत ही अच्छे तरीके से किया गया है। इस जगह पर अद्‌भुत शांति थी। इसका स्थानीय लोगों द्वारा 2001 में भुज में आए भूकम्प के बाद जीर्णोद्धार किया गया तथा इसके लिए यूनेस्को (UNESCO) की तरफ से पुरस्कार प्राप्त हुआ। पास में ही लखपत के एक सूफी संत पीर गौस मोहम्मद का मकबरा भी है।

अरब सागर के तट पर कच्छ की शुष्क भूमि के अंत में नारायण सरोवर तथा कोटेश्वर महादेव मंदिर है। नारायण सरोवर, भारत के पाँच प्रसिद्ध सरोवरों (अन्य चार में सिद्धपुर में बिंदु सरोवर, तिब्बत में मानसरोवर, हम्पी के पास पम्पा सरोवर, तथा पुष्कर में पुष्कर सरोवर) में से एक है। नारायण सरोवर विशाल ताज़े पानी की झील है। हमें ज्ञात हुआ कि यह एक समय महान धार्मिक महात्म्य वाली शानदार झील थी। आज, हालांकि क्षेत्र में पानी की कमी के कारण यह सूखी दिखाई देती है तथा प्लास्टिक की वस्तुओं तथा कचरे से भरी हुई है। कोटेश्वर महादेव मंदिर के पास अरब सागर में सूर्यास्त निहारने लायक था। सच में शानदार!

जनवरी 2019 के पोंगल के दौरान हमने अहमदाबाद में अडालज तथा सीदी सैयद मस्जिद, मोढेरा का सूर्यमंदिर तथा पाटण में रानी की वाव (दोनों युनेस्को विश्व धरोधर स्थल हैं) का भी भ्रमण किया। पोंगल, गुजरात में उत्तरायण के रूप में मनाई जाती है तथा वर्ष के इस समय पर पतंगबाजी बहुत ही प्रसिद्ध है। इस समय अहमदाबाद में प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव मनाया जाता है तथा शहर का आसमान रंग-बिरंगी पतंगो से भर जाता है। सीदी सैयद मस्जिद का निर्माण 16वीं सदी में हुआ था तथा यह पत्थर पर पेचीदा तथा भव्य नक्काशीदार 'जाली' के लिए प्रसिद्ध है जो अहमदाबाद का प्रतीक-चिह्न भी है।

अडालज वाव 15वीं सदी में बनी थी तथा गाँधीनगर ज़िले में अडालज गाँव में स्थित है। यह एक पेंचदार मूर्तिकला वाली अद्‌भुत बावड़ी (एक भूमिगत जल संसाधन तथा भंडारण प्रणाली) है। इसका निर्माण राणा वीर सिंह वाघेला की याद में उनकी पत्नी रानी रुदा देवी द्वारा करवाया गया था, इसीलिए यह रुदाबाई बावड़ी के नाम से भी प्रसिद्ध है।

रानी की वाव का निर्माण सरस्वती नदी के किनारे रानी उदयमती द्वारा उनके पति राजा भीम देव की याद में करवाया गया था, जिन्होंने 11वीं सदी में अनहिलवाड़ क्षेत्र पर शासन किया था। यहाँ मुख्यतः धार्मिक तथा पौराणिक कल्पनाओं को दर्शाती हुई असाधारण रूप से सुन्दर तथा पेंचदार मूर्तिकला वाली सात स्तरों की सीढ़ियां हैं। इसका निर्माण जल का महिमामंडन करने के लिए औंधे मंदिर के रूप में किया गया। इसका रख-रखाव भारतीय पुरातात्विक

सर्वेक्षण (ASI) द्वारा किया जाता है। यह इतनी सुन्दर है कि इसे सौ रुपये के नए नोट पर अंकित किया गया है।

हमें मोढेरा का सूर्य मंदिर और भी अधिक खूबसूरत तथा भव्य लगा। इसका निर्माण राजा भीम देव द्वारा 11वीं सदी में पुष्पवती नदी के किनारे सूर्य देव के सम्मान में किया गया। यह भी एक संरक्षित स्मारक है तथा भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण (ASI) द्वारा इसका रख-रखाव किया जाता है। यहाँ एक मंदिर परिसर है तथा कई छोटे-छोटे मंदिरों के साथ एक भव्य जलाशय (सूर्यकुंड/रामकुण्ड) भी है। मान्यता है कि पवित्र गर्भगृह को इस

तरह से तैयार किया गया है कि विषुव (इक्वीनोक्स) दिनों के दौरान सूर्य की पहली किरण भगवान सूर्य की प्रतिमा को छूती है। ऐसा माना जाता है कि ग्रीष्म ऋतु के उच्चतम शिखर (अयनांत) के दौरान, सूर्य दोपहर में मंदिर के ठीक ऊपर सीधे चमकता है जिस से मंदिर की कोई परछाई नहीं बनती। हालांकि मंदिर के खंडहर में परिवर्तित हो जाने के कारण तथा प्रतिमा के मूल अवस्था में न होने के कारण हम इस बात का सत्यापन नहीं कर सके। मंदिर की छत पर शानदार नक्काशी की गई है तथा मंदिर के बाहर की दीवारों पर सूर्य की मूर्ति की अति सुन्दर नक्काशी की गई है। तोरणसरे को भी विभिन्न मूर्तियों की नक्काशी से सजाया गया है। हमें इस जगह से प्यार हो गया, विशेष तौर पर कुंड से।

एक अन्य स्थान जो हमें बहुत पसंद आया, वह है पालिताना। भावनगर जिले में शत्रुंजय पहाड़ियों पर 860 ख़ूबसूरत जैन मंदिरो का समूह है। यह जैनों के लिए सर्वाधिक पवित्र स्थानों में से है क्योंकि यह मान्यता है कि 24 जैन तीर्थंकरों में से 23 ने (नेमिनाथ को छोड़कर) इन पहाड़ियों को पवित्र किया। मुख्य मंदिर पहले तीर्थंकर ऋपभनाथ को समर्पित है तथा इसका निर्माण सोलहवीं सदी में हुआ था। संगमरमर का नक्काशीदार मंदिर अपने अलंकृत रूपांकनों तथा मूर्तिकला के साथ आँखों को अत्यंत सुखकर लगता है। शत्रुंजय पहाड़ियों पर तीर्थयात्रा के लिए

जाते समय कठोर शर्तों को पूरा करना होता है। यहाँ कुल 3500 सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं तथा किसी भी प्रकार के भोजन या प्लास्टिक की वस्तुओं को साथ ले जाने की अनुमति नहीं है। मुख्य मंदिर में पूजा करने के लिए केवल नए कपड़े पहनने होते हैं तथा सभी को अंधेरा होने से पहले पहाड़ियों से नीचे उतरना होता है। रात को किसी को भी पहाड़ी पर ठहरने की इजाज़त नहीं हैं, मंदिर के पुजारी को भी नहीं; क्योंकि यह भगवान का निवास है और किसी को भी उन को परेशान करने की इजाज़त नहीं है! मैंने बचपन में 'इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया' में पालिताना पर एक लेख तथा तस्वीरें देखी थीं और एक बच्चे के तौर पर इसने मुझे बहुत प्रभावित किया था। कभी सोचा न था कि मेरी कल्पना की उड़ान मुझे वास्तव में, संगमरमर के नक्काशीदार मंदिर की 3500 अलंकृत सीढ़ियों पर ले जाएगी।

ये हमारी कुछ सबसे अच्छी अद्भुत यादें हैं , जो हमने अपनी गुजरात नियुक्ति के दौरान संजोयी। हम निश्चित रूप से और अधिक यादें एकत्र करने के लिए वापस आएँगे।

स्वयं का उपग्रह स्टेशन स्थापित करें

अजय शुक्ल
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मौसम संबंधी जानकारी एकत्रित करने हेतु अनेक उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किए गए हैं जो कि निरंतर चित्र संप्रेषित करते रहते हैं। इन उपग्रहो द्वारा प्रेषित चित्रों को सॉफ़्टवेयर परिभाषित रेडियो के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। कुछ उपग्रह जिनसे आसानी से चित्रों प्राप्त किए जा सकते हैं निम्नवत है :-

उपग्रह का नाम एवं आंकड़ों की प्रसारण की आवृत्ति

नोआ -15 (NOAA 15) 137.6200 MHz
नोआ -18 (NOAA 18) 137.9125 MHz
नोआ -19 (NOAA 19) 137.1000 MHz

इस लेख में उपरोक्त उपग्रहों से मौसम संबंधी चित्र प्राप्त करने के उपाय का उल्लेख किया जाएगा। नोआ -15, 18,19 संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रक्षेपित मौसम विज्ञान संबंधी उपग्रह है जो कि ध्रुव के ऊपर से गुजरते हुए पृथ्वी की परिक्रमा करते रहते हैं तथा किसी स्थान विशेष पर यह सभी उपग्रह क्षितिज से क्षितिज तक कुछ मिनटों के तक गोचर रहते हैं इस दौरान इन उपग्रहों से प्रेषित आंकड़ों की प्राप्ति की जा सकती है। नोवा उपग्रह द्वारा प्राप्त चित्र श्वेत श्याम होते हैं तथा क्षेत्र उल्टे या सीधे भी हो सकते हैं। इनका उल्टा या सीधा होना उपग्रह की परिक्रमा की दिशा के ऊपर निर्भर करता है.उपरोक्त तीनों उपग्रह ए पी टी (आटोमेटिक पिक्चर ट्रांसमिशन) मोड में मौसम विज्ञान चित्रों को प्रसारित करते रहते हैं |

भू स्टेशन स्थापित करने हेतु आवश्यक हार्डवेयर :

1. एक सॉफ़्टवेयर डिफाइंड रेडियो– यह एक यन्त्र है जो रेडियो सिग्नलों को ऐन्टेना के माध्यम से प्राप्त करता है और यूएसबी पोर्ट के द्वारा कंप्यूटर में परिष्कृत सिग्नलों को प्रेषित करता है| यह यन्त्र सॉफ़्टवेयर के माध्यम से नियंत्रित होता है| कम से कम 40 किलोहर्ट्ज़ के आईएफ बैंडविड्थ वाले रेडियो का प्रयोग आवश्यक है |

2. एक लो नॉइज़ एंपलीफायर (एल एन ए)– यह यन्त्र ऐन्टेना से प्राप्त रेडियो संकेतो को आवर्धित करके उन्हें शक्तिशाली बनाता है |

3. एक कंप्यूटर

4. एक एंटीना- इस उदाहरण में वी-डायपोल एंटीना का प्रयोग किया गया है जो कि संतोषप्रद परिणाम देता है।

इस एंटेना को बनाना सबसे सरल है लेकिन इससे प्राप्त परिणाम अधिक अच्छा नहीं होता है। अधिक अच्छे परिणाम के लिए दक्षिणावर्त वर्तुल ध्रुवीकरण (right hand circularly polarisation) वाले"टर्नस्टील एंटीना" या फिर "डबल क्रॉस एंटीना" का प्रयोग किया जा सकता है। यदि आपके पास एंटीना बनाने संबंधी अधिक अनुभव नहीं है तो यह सुझाव है कि आप सर्वप्रथम वी-डायपोल एंटीना से शुरुआत करें, तथा बाद में दक्षिणावर्त वर्तुल ध्रुवीकरण वाले डबल क्रॉस एंटीना या टर्नस्टील ऐन्टेनाका निर्माण करें। यदि वी-डायपोल एंटीना से संतोषप्रद सिग्नल प्राप्त नहीं हो रहे हैं तो "टर्नस्टील एंटीना" या फिर "डबल क्रॉस एंटीना" लगाएं ।

आवश्यक सॉफ़्टवेयर :-

1. एसडीआर शार्प कम्यूनिटी एडिशन (SDR Sharp Community Edition) : https://airspy.com/download/ उक्त कड़ी से डाउन लोड किया जा सकता है, यह सॉफ़्टवेयर रेडियो को नियंत्रिक करने तथा रेडियो संकेतो को प्रसंस्कृत करने हेतु प्रयोग किया जाता है|

2. नोआ-एपीटी इमेज डीकोडर (Noaa-apt image decoder): https://noaa-apt.mbernardi.com.ar/ यह सॉफ़्टवेयर रिकॉर्ड किये हुए संकेतो को कूटानुवाद करके चित्र में बदलता है|

सर्वप्रथम एंटीना का निर्माण करें तथा दर्शाए गए चित्र के अनुसार सभी हार्डवेयर को व्यवस्थित करें।

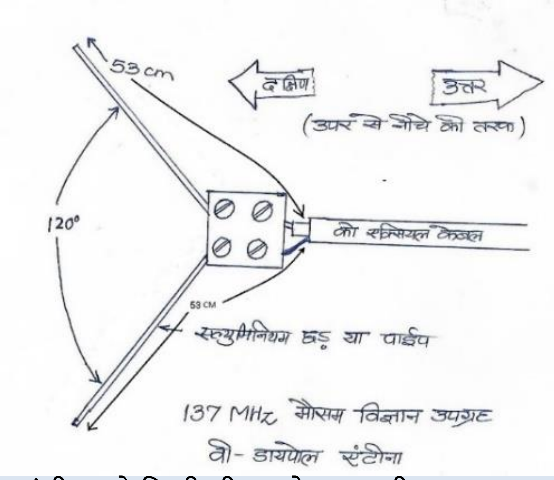

एंटेना व्यवस्था

रेडियो को कंप्यूटर तथा अन्य किसी भी इलेक्ट्रॉनिक वस्तु से कम से कम डेढ़ मीटर की दूरी पर अवश्य रखें, इससे रेडियो व्यवधान से बचा जा सकता है। एंटीना या रेडियो के समीप किसी भी इलेक्ट्रॉनिक वस्तु को चालू हालत में न रखें। एंटीना को किसी भी अवरोध यथा दीवाल, भवन, वृक्ष

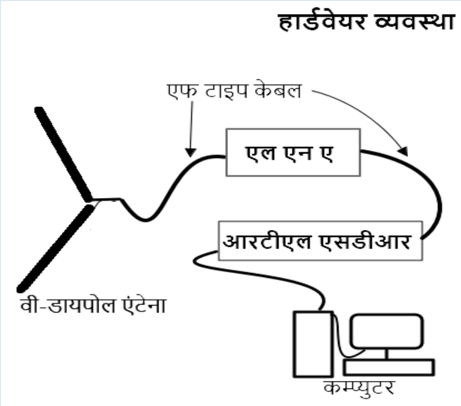

इत्यादि से बाधित ना होने दें। साफ सिग्नल सिर्फ सीधी दृष्टि से ही प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रयोग में हमने डीटीएच टीवी हेतु डिश में लगने वाले एफ टाइप केबल का प्रयोग किया है क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध होता है तथा अपेक्षाकृत सस्ता रहता है। लेकिन यह केबल रेडियो के एसएमए पोर्ट पर फिट नहीं बैठता है, अतः इस रेडियो को इस केबल से जोड़ने के लिए *"एसएमए टू एफ टाइप एडाप्टर"* को प्रयोग में लाया जा सकता है | 'लो नोइज़ एंपलीफायर' को एंटीना के यथासंभव करीब रखें। इस तरह हार्डवेयर के सेटअप को पूर्ण करें।'

सॉफ़्टवेयर का सेटअप : एसडीआर शार्प नामक सॉफ़्टवेयर के कम्युनिटी पैकेज संस्करण को डाउनलोड करें, स्थापित करें तथा प्रारम्भ करें। अब सोर्स

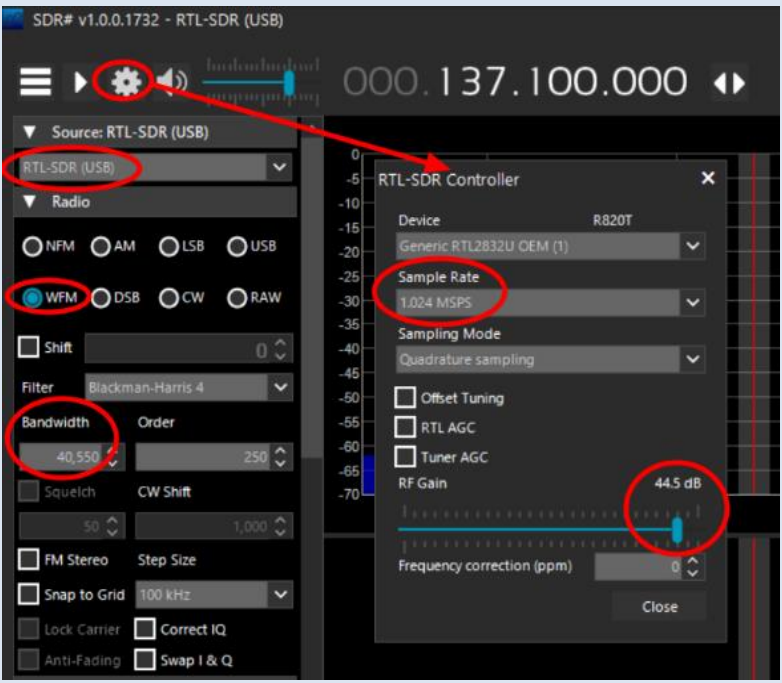

ड्रॉपडाउन मेनू में अपने रेडियो को चुने। यहां मैंने आरटीएल-एसडीआर यूएसबी चुन कर रखा है, क्योकि मैं इस रेडियो का उपयोग कर रहा हूँ । तत्पश्चात "सेटिंग" चिन्ह पर क्लिक करें, एक मेनू खुलेगा, उसमें सैंपल रेट 1.04 एमएसपीसी (MSPS) तथा आरएफ गेन (RF Gain) को अधिकतम पर रखें।

बायस-टी प्रारंभ करना :- लो नॉइज एम्पलीफायर को पॉवर रेडियो में बनी हुई बायस-टी नामक व्यवस्था से मिलती है| नूइलेक (Nooelec) स्मार्टी सीरीज के एसडीआर में बायस-टी हमेशा चालू रहता है अतः इन सभी एसडीआर में बायस-टी प्रारंभ करने या बंद करने का झंझट नहीं रहता है। परंतु यदि आप किसी अन्य रेडियो का इस्तेमाल कर रहे हैं तो संबन्धित उत्पादक से बायस-टी प्रारम्भ करने की जानकारी प्राप्त करें।

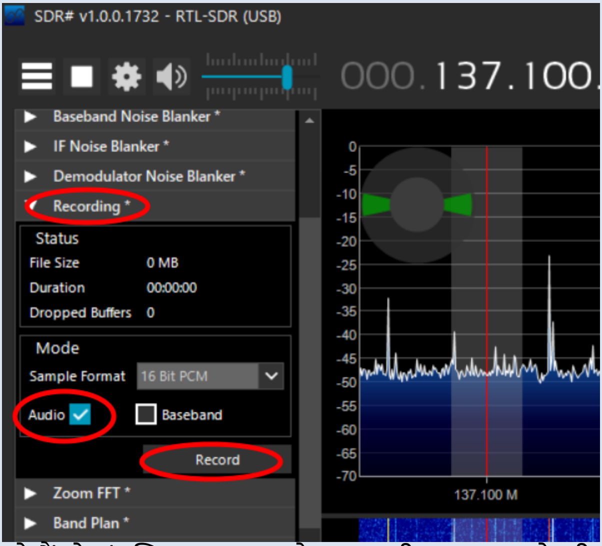

उपग्रह के संकेतो को रिकॉर्ड करना:- अब अपनी भौगोलिक स्थिति के सापेक्ष नोवा 15,18, 19 उपग्रहों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करें| एंड्रॉइड फ़ोन पर लुक फॉर सैट (look4sat) या फिर अन्य किसी एप्लीकेशन का प्रयोग कर सकते हैं। इंटरनेट पर भी अनेक वेबसाइटें हैं जो कि उपग्रहों की स्थिति की सूचना प्रदान करतीं हैं | आपकी भौगोलिक स्थिति के सापेक्ष जब उपग्रह 0 (शून्य) से अधिक उन्नतांश (ऊंचाई) पर होगा तभी सिग्नल प्राप्त हो सकते हैं| जब उपग्रह आपके स्थान से पार होना प्रारंभ कर दे, अर्थात आपके स्थान से उपग्रह का उन्नतांश 0 अंश से अधिक हो तो एसडीआर शार्प (SDR#) सॉफ़्टवेयर में 'प्रारंभ' बटन को दबाकर रेडियो ऑन कर दें। ऑडियो को रिकॉर्ड करना प्रारंभ करें|

नोवा उपग्रहों की प्रसारण आवृत्ति निम्न सारणी के अनुसार है :-

NOAA 15 – 137.6200
NOAA 18 – 137.9125 MHz

NOAA 19 – 137.1000 MHz

जो उपग्रह आपके स्थान से गुज़र रहे हैं उनसे संबंधित फ्रीक्वेंसी पर रेडियो को

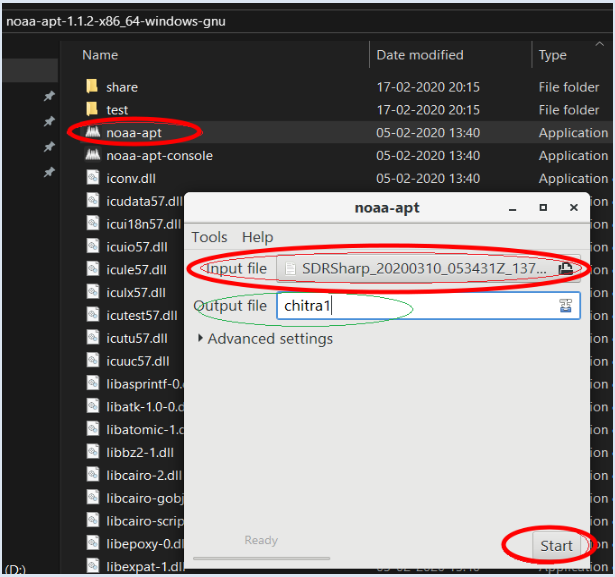

सेट करें, बैंडविड्थ को 40 KHz पर सेट करें। डॉप्लर प्रभाव के कारण उपग्रहों के प्रसारण की आवृत्ति उपग्रह के स्थिति के अनुसार थोड़ी बदलती रहती है, इसे खुद से समायोजित करते रहें। जब नोवा उपग्रह अस्त हो जाए अर्थात उन्नतांश 0 अंश से कम हो तो रिकॉर्डिंग को बंद कर दें। रिकॉर्ड की हुई फ़ाइल एसडीआर शार्प (SDR#) सॉफ़्टवेयर के इंस्टॉलेशन फ़ोल्डर में प्राप्त होगी। सामान्यतः इस फ़ोल्डर का स्थान C:\SDRSharp होता है। रिकॉर्ड की हुई फ़ाइल .wav विस्तार में समाप्त होती है। फ़ाइल के नाम में रिकॉर्ड करने का दिवस तथा समय सम्मिलित रहता है|

उपग्रह के संकेतों का कूटानुवाद (डीकोड) करना

इस फ़ाइल को नोआ-एपीटी डिकोडर (NOAA-APT Decoder) सॉफ़्टवेयर में अपलोड करें। नोआ-एपीटी डिकोडर सॉफ़्टवेयर को https://noaa-apt.mbernadi.com.ar कड़ी से डाउनलोड किया जा सकता है। यह सॉफ़्टवेयर ज़िप फ़ाइल में प्राप्त होता है। इस डाउनलोड की हुई ज़िप फ़ाइल को किसी फ़ोल्डर में निष्कर्षित (extract) तथा इस फ़ोल्डर में प्राप्त noaa-apt.exe फ़ाइल को चलाएं। रिकॉर्ड की हुई .wav फ़ाइल को निम्न चित्र के अनुसार अपलोड करें तथा आउटपुट फ़ाइल का मनोवांछित नाम रखें, (इस उदाहरण में मैंने आउटपुट फ़ाइल को डेस्कटॉप पर रखने का विकल्प रखा है तथा चित्र का

नाम chitra1 रखा है) तथा start बटन दबाएँ। कुछ क्षण बाद उपग्रह द्वारा प्रेषित चित्र चुने हुये फ़ोल्डर में दृष्टिगोचर होगा

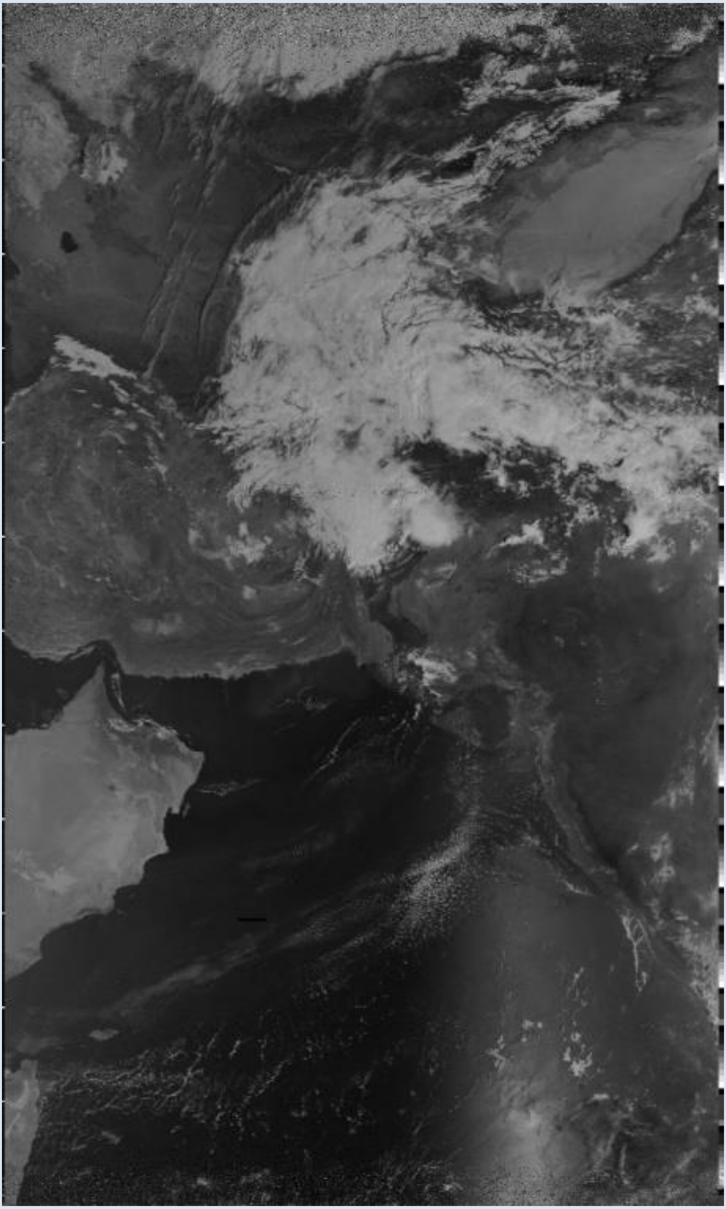

उपरोक्त यन्त्र द्वारा प्राप्त एक उपग्रह चित्र। इस चित्र में अरब सागर, हिन्द महासागर, मध्य एशिया, भारत एवं चीन और सोमालिया के कुछ भाग भी देखे जा सकते हैं। यह चित्र घर मे स्थापित यंत्रो मात्र से प्राप्त हुआ है।

हर इंसान कुछ कहता है

अनीता सिंह
व.उप महालेखाकार

कहानी लगन की, परिश्रम और आस की,

कहानी उम्मीद और परिहास की,

गाथा प्रेम की, तो कभी विश्वासघात की,

हर इंसान कुछ कहता है...

सँजोये खुद में, लौ खुदाई की,

संभालता एवं संवारता जिसको हर हालत में,

पारखी नज़रों से जिसको,

परख सको तो परखो,

हर इंसान कुछ कहता है...

कहीं झलक बीते कल की, तो कहीं दृश्य वर्तमान का,

कहीं कहानी मानवता की, तो कहीं दास्तान-ए-क्रूरता

हर एक रचना मानो अनोखी एवं कालजयी,

गर पढ़ सको तो पढ़ो,

हर इंसान कुछ कहता है...

कभी हँसाये, कभी रुलाये,

कहीं वीरता, तो कहीं भय,

सैर कराने को उत्सुक इस भावभरी दुनिया के,

संग चल सको तो चलो,

हर इंसान कुछ कहता है...

हिन्दी पखवाड़े में कविता पठन प्रतियोगिता के दौरान मंच पर उपस्थित निर्णायक मण्डल के सदस्य

गांधीजी का ‘जंतर’

अनिल बेनीवाल
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

भारत में लाखों करोड़ो लोग एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें पढ़ते हुए बड़े होते हैं। मैं भी उनमें से ही एक हूं। एन. सी. ई. आर. टी. की किताब के प्रारम्भ में गाँधीजी का एक जंतर दिया रहता था। बचपन में मैं हर एक किताब में उसे पढ़ता था। लेकिन उस समय तक न मैं गाँधीजी की महानता को समझता था और न ही 'जंतर' का अर्थ। अपितु मुझे तो एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन में ही ख़ामी नज़र आती थी कि- देखो 'मंतर' को 'जंतर' लिख रखा है! फिर समझ में आया कि 'जंतर' का अर्थ है- 'ताबीज़', जिसे अच्छा भाग्य पाने की इच्छा से धारण किया जाता है। गाँधीजी का वह 'जंतर' मैं नीचे दोहरा रहा हूं-

“तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ:

जो सब से ग़रीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो, और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा? क्या उस से उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उस से उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम समाप्त होता जा रहा है।”

समय के साथ-साथ मुझे इस जंतर का महत्व समझ में आया और मैंने इसे धारण करने का प्रयास किया। भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग में नौकरी लगने के बाद मानवीय पीड़ा के तीन दृश्यों ने मुझे भावनात्मक रूप से अंदर तक झकझोर दिया। मैं यह मानता हूं कि ये दृश्य गाँधीजी के जंतर को आत्मसात करने में सहायक सिद्ध हुए। मैं ये समझता हूं कि ये दृश्य बहुत से पाठकों को विचलित कर सकते हैं पर चूँकि मुझे मेरा व्यक्तिगत अनुभव बयान करना है तो इन दृश्यों का वर्णन अनिवार्य है। दृश्य इस प्रकार हैं:

दृश्य ०१: गुजरात के राजकोट शहर में दोपहर के लगभग दो बजे हैं। महीना मुझे याद नहीं है लेकिन वो गर्मी के दिन थे। भारत के इस पश्चिमी राज्य में गर्मी के प्रचंड प्रकोप के बारे में आप सिर्फ़ कल्पना ही कर सकते हैं। मैं होटल से

खाना खाकर ऑफिस की तरफ अपने एक-दो दोस्तों के साथ पैदल ही आ रहा हूँ। होटल ऑफ़िस से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर था, अतः खाने के बाद और गर्मी के बावजूद पैदल आने के बारे में सोचा जा सकता था। मैं जब भी कहीं जाता हूँ तो अपने आस-पास के दृश्यों का अवलोकन करता रहता हूँ, और कुछ नया जानने का मौका ढूंढता रहता हूँ। अचानक मेरी नज़र सड़क के किनारे फुटपाथ पर लगभग ७० वर्षीय एक बुज़ुर्ग पर पड़ती है। वो बुज़ुर्ग पेशे से 'मोची' थे, और उस तपती गर्मी में धूप से बचने के लिए एक छतरी ताने बेठे थे। आस-पास कोई दूसरा छाया का साधन नहीं था। छतरी आपको सूरज की सीधी किरणों से तो बचा लेगी लेकिन गर्म सड़क से उठती गर्मी की लौ और शरीर को झुलसा देने वाली लू से कैसे बचा सकती है? इस वजह से उन बुज़ुर्ग की हालत दयनीय थी, और वो अपना मुंह खोले, दीवार पर सिर लगाये, अपनी आँखे बंद किये बैठे थे। शायद इस आस में कि कोई तो ग्राहक आएगा, जिसे अपने जूते ठीक करवाने हों या जूतों की पॉलिश करवानी हो। यदि ऐसा होता है तो ही वो बुज़ुर्ग दो समय के भोजन के बारे में सोच सकते हैं । उस बुज़ुर्ग की वह स्थिति देखकर और समझकर मैं बमुश्किल अपने आप को रोने से रोक पाया। उसी वक्त मैंने मेरी स्थिति के लिए उस परमपिता को धन्यवाद दिया जिसने मुझे होटल में खाने लायक साधन दिए हैं। आज भी मैं जब भी राजकोट में उस सड़क से गुज़रता हूँ, तो मुझे उस बुज़ुर्ग की छवि स्मरण हो आती है।

दृश्य ०२: सूरत शहर में शाम के लगभग ६.३० बजे हैं। मैं अपनी टीम के साथ ऑडिटी कार्यालय से होटल आ रहा था। होटल रेलवे स्टेशन के पास ही था। अतः हम लोग स्टेशन के पास ही ऑटो से उतर गए और पैदल ही होटल की तरफ चल पड़े। नज़दीक ही ट्रैफिक सिग्नल था जहाँ तीन-चार सड़कें आपस में मिलती थी। भीड़ इतनी कि पैदल निकलना भी मुश्किल था। तभी मैं देखता हूँ कि एक सड़क के डिवाइडर (जो कि लगभग तीन/चार फुट चौड़ा था) पर एक आदमी ने अपने लगभग दो साल के बच्चे को सुला रखा था। वह बालक नींद में था। मैं एक पल के लिए ठिठका, शरीर में एक प्रकार की सिहरन सी दौड़ गयी। होटल तक का बाकी का रास्ता मैंने इसी सोच में निकाल दिया कि क्या ऐसे मानव जन्म के लिए ही आत्मा बार-बार जन्म लेती है? क्या यही मानव जीवन की उत्कृष्टता है? दूसरे, हम साधन संपन्न लोग जो पर्यावरण प्रदूषण के लिए हो-हल्ला करते रहते है (ये अलग बात है कि पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण हम साधन संपन्न लोग ही हैं) और एयरकंडीशनर की ठंडी और ताज़ी हवा भी हमें गहरी नींद दिलाने में नाकामयाब रहती है, वहीं वह बालक भयंकर प्रदूषण और शोर-शराबे के बीच भी गहरी नींद में था। इस स्थिति की तुलना अपने आप से कीजिये। हमारे पास फ्लैट है तो बँगला चाहिए, बँगला है तो हवेली चाहिए। एक मकान है

तो दूसरा चाहिए, दूसरा है तो तीसरा चाहिए और लालसा का यह अंतहीन सिलसिला हमारी अंतिम साँस तक चलता रहता है।

दृश्य ०३: रविवार की एक सुबह मैं अपने फ़्लैट की बालकनी में कुर्सी पर बैठा चाय पी रहा था। सामने से सड़क गुज़रती थी। एक आदमी, जो पेशे (शायद ये शब्द उचित तो नहीं है, पर इसका विकल्प भी नहीं है) से कचरा बीनने वाला था, साइकिल रिक्शा पर अपनी पत्नी और छोटे बच्चे के साथ जा रहा था। अनायास ही मेरी नज़र उस परिवार के सदस्यों के चेहरों पर पड़ी। उनके चेहरे और आँखें भाव शून्य थे। शायद जीवन से उन्हें कुछ मिलने की आशा ही नहीं थी। मेरे मन में ये विचार आया कि एक तरफ़ ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी उम्मीदों का दीपक ही बुझ गया है, और एक तरफ़ ऐसे लोग हैं जिनकी आँखों से ताउम्र लालसा की लपटें निकलती रहती हैं। ऐसी लपटें जो अपने ही समाज का सब-कुछ हड़पकर भी शांत नहीं होतीं।

लेकिन हम जीवन की जिस आपा-धापी में घिरे हैं वहां मानवीय पीड़ा के बारे में सोचने का समय ही किसके पास है!

इन तीन दृश्यों का स्मरण और गाँधीजी का जंतर मुझे ऐसा कुछ भी करने से रोकते हैं जो मानवता के सिद्धांतो के विपरीत हो। भारत जैसे ग़रीब और विकासशील देश में जहाँ विषमताएँ अपने चरम पर हैं, हमें गाँधीजी के जंतर को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

ऑडिट भवन, अहमदाबाद के प्रांगण में अवस्थित साबरमती आश्रम का प्रतिरूप

इसरो में चंद्रयान-2 की लैंडिंग को देखने का अनुभव

अनुष्का अग्रवाल,
सुपुत्री श्री नितिन अग्रवाल, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

इसरो केंद्र, बेंगलुरु में हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ चंद्रयान-2 की लाईव लैंडिंग देखने का अनुभव साझा कर रही हूँ।

अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों की जागरूकता बढ़ाने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने पूरे भारतवर्ष के विद्यार्थियों के लिए एक ऑनलाइन अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया। यह प्रश्नोत्तरी 10 अगस्त से 20 अगस्त 2019 तक थी जिसे बाद में 25 अगस्त तक कर दिया गया। इस प्रश्नोत्तरी में कक्षा आठवीं से दसवीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते थे तथा अव्वल आने वालों को माननीय प्रधानमंत्री के साथ बहु-प्रतिष्ठित चंद्रयान-2 की लैंडिंग देखने का अवसर मिलना था।

इस प्रश्नोत्तरी में 20 प्रश्न थे जिसे600 सेकंड में पूरा करना था। प्राप्त अंकों तथा लिए गए समय के आधार पर प्रत्येक राज्य तथा केंद्र-शासित प्रदेश से दो विद्यार्थियों का चयन किया गया। 30 अगस्त को परिणाम घोषित किया गया। मैं गुजरात राज्य में अव्वल आई थी, सो मुझे इसरो की तरफ से चंद्रयान-2 की लैंडिंग देखने का न्यौता मिला।

मैं बहुत खुश थी। 6 सितंबर को मैं और मेरे पापा बेंगलुरु पहुँचे और इसरो का स्टाफ़ हमें इसरो के अतिथि गृह (यह इसरो मुख्यालय से 2 घंटे की दूरी पर है) ले गया। प्रश्नोत्तरी में अव्वल आने वाले अन्य विद्यार्थी (लगभग 70) भी दोपहर तक वहाँ पहुँच गए थे, और हम सभी ने अतिथिगृह का चक्कर लगाया। हमने अंतरिक्ष से लेकर पौराणिक कथाएँ सभी पर चर्चा की। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ चंद्रयान-2 के लैंडिंग को देखने के लिए हम सभी बहुत ही उत्साहित थे।

दोपहर में हम सभी मीडिया से घिरे हुए थे और उन्होंने हमसे चंद्रयान-2 और इसरो के अंतरिक्ष कार्यक्रम के बारे में कई सवाल किए। हम सभी उनके प्रश्नों का उत्तर देने को बहुत आतुर थे। संध्या में एक और कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका सीधा प्रसारण डी.डी. न्यूज़ द्वारा किया गया।

हमारे लिए दो सभाएं आयोजित की गई थीं : दोपहर 1:00 बजे से 2:00 बजे तक और शाम 7:00 बजे से 8:00 बजे तक। हमें पूरी रात जागना था सो हमारे पास लगभग 5 घंटे (2:00 बजे से 7:00 बजे शाम) सोने का समय था। अंतिम सभा के

बाद हमारे अतिथिगृह को छोड़कर ईस्ट्रैक (इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क) जाने का समय हो गया। वहाँ केवल विद्यार्थियों को जाने की अनुमति थी और माता-पिता को अतिथि गृह में बैठकर सीधा प्रसारण देखना था। रात 8:30 बजे हम बस पर सवार हुए और अपनी यात्रा शुरू की। लगभग 10:00 बजे से 11:00 बजे (मुझे सटीक समय याद नहीं क्योंकि हमें अंदर अपना फ़ोन ले जाने की अनुमति नहीं थी) के बीच हम ईस्ट्रैक पहुँचे।

मैं यह ज़रूर बताना चाहूंगी कि मैं ईस्ट्रैक पहुँच कर इसकी आकर्षक दिव्यज्योति में खो गई। मेरी आँखें खुशी से चमकने लगीं। मेरे सामने भारत के शीर्षस्थ वैज्ञानिक थे। रात 11:30 बजे तक हम लोग भवन के अंदर एम.ओ.एक्स.- 2 कंसोल में आराम से बैठे हुए थे। हम लोग मुख्य नियंत्रण कक्ष में बैठे हुए थे जहां पर हमारे सामने छह स्क्रीन लगे थे। सभी स्क्रीन लैंडर के स्थान, गति इत्यादि से संबन्धित सूचनाएं दिखा रहे थे।

जहां हम बैठे थे वहीं 15 मिनट के बाद डॉक्टर कैलाशावादिवू सिवन आ गए। वे भारत के रॉकेट-मैन के रूप में भी जाने जाते हैं। मैं उन्हें अपने सामने देखकर रोमांच से भर गई। फिर हम लोगों ने खड़े होकर एक स्वर में उन्हें "मलाई वणक्कम सर" कहकर उनका अभिवादन किया। उन्होंने मुस्कुराकर वापस हमारा अभिवादन किया। उनसे हाथ मिलाने के बाद मेरे अंदर एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। हम लोगों में उनका ऑटोग्राफ लेने की होड़ लग गई और हममें से कुछ को सौभाग्य से वो मिल भी गया ।

मैंने यह सुना था कि वो बड़े विनम्र हैं और उनका हाव-भाव भी इसका गवाह था। इसके बाद वो मुख्य नियंत्रण कक्ष में चले गए। उसके तुरंत बाद डॉक्टर कस्तूरीरंगन (इसरो के भूतपूर्व अध्यक्ष) का आगमन हुआ और मैंने उनसे भी हाथ मिलाया।

अब हम सभी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम अपने लैंडर का गंतव्य जानने के लिए समय-समय पर स्क्रीनों को देख रहे थे। रात 1:00 बजे प्रधानमंत्री सेंटर में पहुंचे। डॉक्टर सिवन एवं इसरो के पूर्व अध्यक्षों ने उनका स्वागत किया। हम सभी खड़े हो गए। उन्होंने अपना स्थान ग्रहण किया। उसके बाद उन्होंने हमारी ओर देखकर अपना हाथ लहराया। हम लोगों ने भी उनकी तरफ हाथ लहराया। यह एक अद्‌भुत एहसास था। मेरी आँखें उन पर टिक गईं और कुछ देर के लिए मैं लैंडर के बारे में भूल गई। उन्हें विस्मय से देखते हुए मेरी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। हम लोग प्रसन्नता से झूम रहे थे। हम लोग माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, डॉक्टर सिवन और विक्रम को ही देख रहे थे।

लगभग 1:40 बजे डीसेंट फेज़ेज़ शुरू हो गए। अब महत्वपूर्ण चरण शुरू हो चुका था, 1:40 बजे रफ़-ब्रेकिंग शुरू हुआ। 1:50 बजे यह चरण सफलतापूर्वक पूरा हुआ (तालियां बजी)। अब 15 मिनट का कठिन चरण शुरू हुआ। हमारी आँखें स्क्रीन पर टिकी थीं। अब हमारा गर्व- विक्रम, 2.1 किलो मीटर की ऊंचाई पर था। इसने कई बाधाएँ जैसे कि विषम चन्द्र गुरुत्वाकर्षण, चरम तापमान इत्यादि को पार किया। 5 मिनट बीत गए लेकिन ऊंचाई अभी भी 2.1 किलोमीटर थी। हम सभी विकल थे। वैज्ञानिकों के लिए भी यह विस्मयकारी था। लेकिन प्रधानमंत्री आशान्वित थे।

पूरे कक्ष में सन्नाटा छा गया। करीब 2:00 बजे मैंने एक वैज्ञानिक को रोते हुए देखा। माहौल काफ़ी उलझन भरा था। 10 मिनट बाद कुछ और वैज्ञानिक मुख्य कक्ष से बाहर आए। जब हमने उनसे पूछा कि आखिर हुआ क्या है, तो उन्होंने यह बताया कि ऐसा लग रहा है कि विक्रम लैंडर के साथ हमारा संपर्क टूट गया है। 30 मिनट के बाद डॉक्टर सिवन ने यह घोषित किया कि संपर्क सच में टूट चुका है। हमें यह सुनकर बहुत दुख हुआ।

प्रधानमंत्री ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने वैज्ञानिकों का मनोबल बढ़ाया और डॉक्टर सिवन को सहानुभूति दी। इसके बाद हमें माननीय प्रधानमंत्री से मिलवाया गया। उन्होंने अपने शब्दों से हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने हमारे उदास मन को आशा से भर दिया। उन्होंने हमें सलाह दी कि जीवन में हमेशा बड़ा उद्देश्य रखो और अपने उद्देश्य को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटो और फिर उन्हें पाने की कोशिश करो। उन चीज़ों की चिंता मत करो जो तुम पाने में सक्षम नहीं हो, बल्कि जो चीज़ें तुमने पा ली है, उनसे प्रेरणा लेकर अपने उद्देश्य की तरफ जाओ।

अंत में मुझे डॉक्टर सिवन से बात करने का मौका मिला। साहस जुटाकर मैंने उनसे विक्रम से संपर्क टूट जाने के बाद मिशन के संबंध में प्रश्न पूछा। मैंने उनसे पूछा, “सर जब विक्रम से हमारा संपर्क टूट गया है, तब मिशन कितने प्रतिशत तक सफल रहा?”

उन्हों ने जवाब दिया, “यह 85 प्रतिशत सफल रहा”।

मिशन पूर्ण रूप से सफल न होने के कारण थोड़ा दुखी मन और प्रधानमंत्री तथा डॉक्टर सिवन से मिलकर थोड़ा खुश मन लेकर हम लोग अपने अतिथिगृह लौट आए।

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगी कि इसरो का यह प्रयास सार्थक रहा। ऑर्बिटर

अभी भी चंद्रमा की परिक्रमा कर रहा है और हमें सूचना भेज रहा है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत के अलावा किसी भी देश ने लैंडर उतारने का साहस नहीं किया है। अपने लक्ष्यों, लैंड करने का स्थान, चंद्रमा की अन्य भौगोलिक कठिनाइयों और 3.84 लाख किलोमीटर की दूरी को मद्देनज़र रखते हुए मात्र 978 करोड़ के बजट में चंद्रयान-2 लाँच करके इसरो ने सराहनीय कार्य किया।

इसरो को सलाम है। जय हिंद, जय इसरो।

माननीय प्रधानमंत्री महोदय के साथ मैं (पहली पंक्ति में दायें से तीसरी) और अन्य विद्यार्थी।

ख़्वाब

अभिजीत आनंद
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

रहते हैं ख़्वाब सिर्फ ख़्वाबों के साए में,
कहाँ फ़ुर्सत उन्हें जलने की, जीवन तपस में,
खोज लेते वो किसी कल्पित, विचित्र पैठ को,
बन जाते वो, बिना किसी आधार स्तम्भ के,
बुन जाते वो सदा किसी अदृश्य, विचित्र माया के जाल से।

सोख सारा जीवन अमृत बन जाते वो बादल,
फिर छितर जाते वही अमृत छिछली जीवन धरा पर,
मन उद्वेग से दौड़ चलते जाते किसी अगम्य, अद्भुत की ओर।

चाहा था किसी ने अगणित मुश्किलें पार कर पकड़ना इसे,
हारकर बैठ तरु की छाया में, जान इसे, बतलाया, मत दौड़ पीछे इसके,
ये अनश्वर है और नश्वर हैं ये अरमान तेरे,
ज़िंदा रहते नहीं वो दबे-कुचले अरमानों में,
निद्रा में कितनों ने देखा इसे कई रूपों में,
मगर खोज की उसकी चाह में, बैठे सभी उसकी अनिश्चित राह में।

ये पीले पड़ जाते पत्ते

अभिषेक कुमार
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सृजित हो बढ़ नभ की ओर,
गूढ़ हरे हो जाते पत्ते।
नहा रवि प्रकाश में,
पीले पड़, तीव्र अनिल से,
सुप्त धरा पर गिर जाते पत्ते।

खींच जीवन सत्व,
मूल-शिराओं से,
विजन वन में,
गिर में, शैल में, वारिधि में
गाते नित अमृत जीवन स्वर।

सकल जठराग्नि शांत कराते,
बन जाते जीवन की डोर।
तो कभी भीषण दावानल में,
अग्नि विजय का मनाते शोर,
अस्तित्वविहीन हो जाते पत्ते।

सूख अस्थिपंजरों से,
चटककर बिखरते जाते,
और मृदा को अंक लगा,
हो पञ्च तत्वों में विलीन,
सर्जन में जुड़ जाते पत्ते।

क्या पुरुषत्व मानवता से भी प्रबल है?

अमन दीप
बहु-कार्य कर्मचारी

पौराणिक कथाओं के अनुसार हम सभी मनु की संतानें हैं। हम सभी मानव हैं। पुरुषत्व और स्त्रीत्व का संयुक्त नाम ही तो मानव जाति है।

पर आज के सामाजिक परिदृश्यों को ध्यान में रखने पर पता नहीं क्यों मैं इस गफ़लत में पड़ जाता हूँ कि "क्या आज का पुरुष मानव है? वो मानव है या केवल पुरुष है? क्या वो पुरुष भी है? क्या पुरुषत्व की भावना इतनी प्रबल है कि वो बाकी तमाम भावनाओं का दमन कर मानव को केवल पुरुष बना दे? क्या ये इतनी प्रबल है कि पुरुष रिश्तों का अपमान करे, स्त्रियों पर ज़ुल्म करे, यहाँ तक कि मानवता को भी शर्मसार करे? आज के पुरुषों से मेरा यही सवाल है। अगर ये भावना इतनी प्रबल है तो क्यों? प्रकृति ने तो हमें केवल इसी भावना के साथ जन्म नहीं दिया, फिर ये भावना इतनी प्रबल क्यों?

"पुरुषत्व या पौरुष" आखिर क्या है ये? क्या स्त्री पर नृशंसता का नाम ही पौरुष है, पुरुषत्व है? अगर यही पुरुषत्व है तो मुझे बेहद ग्लानि है कि आज का पुरुष पौरुष को तो पहले ही खो चुका है और वहशियत को पुरुषत्व समझकर उसी पर ग़ुरूर कर रहा है।

हमारे समाज में आज हर दूसरा अपराध स्त्रियों पर हो रहा है। कहीं स्त्रियों को दहेज के लिए जलाया जाता है तो कहीं अहंकार की तुष्टि के लिए उन्हें अकल्पनीय यातनाएँ दी जाती हैं। वो पुरुषत्व जो स्त्री को अपनी जागीर समझता है। जननी को, जीवन देने वाली को दमित करते क्या लज्जा भी नहीं आती? कई घटनाओं में पुरुषों ने हैवानियत की सीमाएँ लांघ दी हैं। आज पुरुष शब्द से बुरा कोई शब्द न रहा। क्या इसीलिए हम पृथ्वी पर हैं?

क्यों पुरुषों ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है कि कुछ परिस्थितियों में कोई स्त्री पुरुष और मृत्यु में से मृत्यु का ही चयन करे। क्या ये परिस्थिति मानवता के भविष्य को विनाश के गर्त में नहीं धकेल रही? अगर ऐसा ही रहा तो 'पुरुष' शब्द मानव इतिहास का स्याह धब्बा बनकर रह जाएगा।

प्रकृति ने पुरुष को ताकत दी है रक्षा के लिए, बुद्धि दी है विकास के लिए। क्या हम उसका सदुपयोग कर रहे हैं? एक रिपोर्ट के अनुसार स्त्रियों पर होने वाले अधिकतर अपराधों में अपराधी उनके परिचित होते हैं। क्या पुरुषत्व या पौरुष

की भावना इतनी प्रबल है कि ख़ून के रिश्तों को भी कलंकित कर दे? क्या ये भावना इतनी प्रबल है कि अजन्मी कन्या को गर्भ में ही मार दें? अगर ऐसा ही रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मानव जाति विलुप्त हो जाएगी। स्त्रीत्व के बगैर मानव जाति का कोई भविष्य नहीं। ये दायित्व हम सभी पर है कि हम ऐसा न होने दें। अगर हम अपने समाज को, आने वाली पीढ़ियों को इस विकृत पुरुषत्व से मुक्त न करा पाए तो मानव जाति का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा और आनेवाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ़ नहीं करेंगी।

आज के समय की मांग ये है कि हम अपने अनुजों को, अपनी आनेवाली पीढ़ियों को सही और समुचित शिक्षा दें। उन्हें सुसंस्कृत करें और केवल पुरुष न बनाकर मानव बनाएँ, मानवता सिखाएँ। हमें उन्हें समझाना होगा कि "पुरुष वो नहीं जो रोए नहीं, वरन पुरुष वो है जो रुलाए नहीं"। इस बात की गहराई को अगर पुरुष जाति समझे और उसे अमल में लाए तो मैं निश्चय ही ये कह सकता हूँ कि मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल होगा और हमारा समाज कई बुराइयों से मुक्त होकर प्रगति पथ पर निरंतर अग्रगामी होगा। "मैं पुरुष विरोधी नहीं हूँ परंतु आज की वास्तविकता ने मुझे यह प्रश्न करने पर विवश कर दिया है।

महिला दिवस के अवसर पर कार्यालय की महिला सदस्यों के लिए जलपान तैयार करते हुए पुरुष सहकर्मी

मेरे निश्छल दोस्त

कुसुम लता
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

एक तुम सब में ही मैंने सदा देखा है,
कि प्रेम की निश्छल अनुभूति क्या है,
बाकी दुनियावी हैं मेरे सब रिश्ते नाते,
आते हैं, अपनी मनमर्ज़ी करके हैं चले जाते।
और बिना किसी स्वार्थ, कभी मेरी ओर नहीं आते,
कोई आया, मेरे करीब, मेरी रूमानियत के वास्ते,
तो किसी ने दी, ख़ून के रिश्तों की दुहाई,
किसी ने मुझसे मेरी रूहानियत चुराई।

तो कोई आया मेरे पास, केवल मेरे ही रास्तों को मोड़ने,
न समेटे किसी ने मेरे टुकड़े, आये थे बस तोड़ने,
कोई आया मेरी ओर, मात्र मेरे अल्प ज्ञान के लिए,
किसी ने जोड़े रिश्ते, मेरे मन की ताकत छीनने के लिए।
तो कोई आया, मेरी दोस्ती की सच्चाई परखने को,
किसी ने निभाया मुझसे नाता, बस मेरा मन रखने को,
कोई पहुँचा, मेरे मनघर में, आशियाना पाने वास्ते,
था राही वो भी, चल पड़ा, जैसे ही दिखे उसे रास्ते।

किसी ने किया मजबूर मुझे, झूठे रिश्ते निभाने को,
तो कोई चल पड़ा, मुझे मेरी ही औकात दिखाने को,
किसी ने एहसान भी किये मुझ पर, मेरे लिए बदलकर,
कोई मुझे ही लूट ले गया मेरी दोस्ती की कीमत लगाकर।

पर तुमने, तुम सबने ही मुझे पूरा किया है,
दोस्ती पर मेरे विश्वास को मज़बूत किया है,
मेरे आहत मन को सुकून दिया है,
मुझे निःशब्द किया है अपने निःस्वार्थ प्रेम से।
मेरी रूह को अपने निश्छल सवालों से छुआ है,
निष्कपट भावों से मुझे अपने सीने से लगाया है।
मेरे पास कुछ नहीं देने को, तुम सबको,
तुम्हारे प्रेम के बदले प्रेम नहीं दे पाऊँगी,
क्योंकि बदले में कुछ दिया तो, मेरा तुम्हारा नाता सीमित हो जाएगा,

बहने दो इन भावों को, अविरल मुझमें,
बिखर जाने दो मुझे आज खुद को खुद में।
समेट लेना मुझे फिर, टूट जाऊं जो बिखर कर,
बढ़ने दो मुझे आगे, मन में तुम सबकी छवि लेकर,
तुमने ही मुझे, आज मुझसे मिलाया है,
अपनी इस मासूमियत को हमेशा पास रखना,
बांटते रहना सदा ये भाव अपनी प्रेम मंजूषा से।
शायद किसी दिन सब ख़तम हो जाए दुनिया से,
सारे छल, कपट और सारे स्वार्थ,

बन जाए फिर से शायद, ये जग एक प्रेमशाला,
मिट जाएं शायद झूठे भाव, सबके ही मन से,
तुम कोशिश करते रहना, न हार मानना कभी,
तुम मनवीर हो, जानती हूँ, कर जाओगे सभी।

जीवन की व्यथा क्या बोलूँ मैं

चिंटू कुमार गुप्ता
लेखा परीक्षक

जीवन की व्यथा थी कुछ ऐसी क्या बोलूँ मैं,
भ्रमित था पथ मेरा, बिखरे हुए थे शूल, मंज़िल भी थी दूर।
अज्ञात, मैं चला और चलता ही गया,
विष, वेदना सहन करता ही गया,
हर बार गिरा पर बार-बार उठा मैं।

सहसा, एक दिन, मैं झूम गया जैसे बूंद हो पत्ते पे,
झिलमिल सी बूंदे चूम गया।
क्योंकि मिल गई थी मुझे जीविकोपार्जन के लिए पहली नौकरी,
पर धीरे-धीरे रहा न जीवन में फिर वही उल्लास,
फिर से जीवन में व्यथा आ गई क्या बोलूँ।

बन गए फिर साथी नए,
पर धीरे-धीरे वो बात न रही,
लगा, साथ रहकर भी सभी बन गए अजनबी,
रह गया साथियों के बीच एक नाम बनकर,
फिर अपने जीवन की व्यथा क्या बोलूँ।

लेकिन, फिर कुहासे में एक किरण दिख गई,
सहसा आत्मविश्वास प्रबल हो गया और हासिल हो गई मंज़िल।
प्रण कर लें, अगर कुछ कर दिखाना हो,
तो जीवन भी हो जाता है आसान।
वरना जीवन की व्यथा क्या बोलूँ मैं।

है पिता भी एक इंसान, कोई भगवान नहीं

जितेंद्र कश्यप
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

है पिता भी एक इंसान, कोई भगवान नहीं**,**

रही होंगी कुछ ख्वाहिशें उसकी भी,
तोड़ दिया कब दम, घर की दहलीज़ पर, पता ही नहीं।
देखे होंगे ख़्वाब उसने भी, ज़िन्दगी में अपने,
पर कब कर दिए क़ुर्बान, औलाद के अरमान के लिए, पता ही नहीं।
बढ़ाये थे कदम उसने भी, पाने को मंज़िल अपनी,
पर कब जकड़ गए पैर ज़िम्मेदारियों में, पता ही नहीं।
सबके लिए थी उसके चेहरे पर, एक हल्की सी मुस्कान,
पर दबी थी कितनी मायूसी और दर्द उसके मन में, पता ही नहीं।
है पिता भी एक इंसान, कोई भगवान नहीं ।

खूब लड़ा जो दुनिया से, औलाद की परवरिश के लिए,
हार गया कब उसकी ख़ुशी के लिए, पता ही नहीं।
उंगली पकड़ कर चलना सिखाया जिसने,
कब घुटनों ने उसके जवाब दे दिया, पता ही नहीं।
करता रहा कोशिश उम्र भर, खुद को साबित करने की,
पर हो गई होगी कुछ गलती, क्या औलाद को इतना भी पता ही नहीं,

सच है माँ की ममता की कोई सीमा नहीं,
पर पिता के प्रेम की कितनी है थाह, पता ही नहीं।
समझे कोई भगवान उसे, ऐसी उसको आस नहीं ,
बस ढांढस बंधा दे कोई, इतनी सी थी चाह उसकी, पता ही नहीं ।
है पिता भी एक इंसान, कोई भगवान नहीं।

अनजान मददगार

धनवंती टिब्बानी सिसोदिया
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

अपनी न्यूयॉर्क यात्रा का एक सुखद अनुभव आप लोगों के साथ बाँटना चाहूंगी| संयुक्त राष्ट्र की लेखापरीक्षा समाप्त होने के बाद मैंने १५ दिन का अवकाश लिया था। न्यूयॉर्क से २ घंटे की दूरी पर न्यूजर्सी में मेरा भाई रहता है। लेखापरीक्षा समाप्त कर मैं अपना अपार्टमेंट, जो कि किराये पर लिया था, खाली करके अपने भाई के पास जा रही थी। सब सामान बाँधने के बाद हमारे पास ४ बड़े ट्रॉली बैग थे। मैं और मेरे पति टैक्सी बुक करके बस स्टेशन पहुंचे। वहां से २ घंटे का सफ़र तय करके हम मेरे भाई के घर के नज़दीक के बस स्टॉप पर उतर गए। हमारे पास सामान बहुत था और वह बस की डिक्की में रखा था, उसे निकालने के लिए बस ड्राईवर जो कि अमरीकी मूल का था, बस से उतर कर आया और मेरे पति की सामान निकालने में मदद की। उसके पश्चात उसने बड़े ही प्यार से पूछा कि हम लोग कहाँ से आये हैं, भारत या पाकिस्तान? जब हमने बताया कि हम भारत से आये हैं तो वह बड़ा खुश हुआ और बोला कि मैं कुछ ही समय पूर्व भारत गया था और मुझे भारत बहुत अच्छा लगा। यह सुनकर हमें बहुत आनंद का अनुभव हुआ। हमने उसे उसकी उदारता एवं शिष्ट व्यवहार के लिए बहुत धन्यवाद दिया। वह हमें हमारी आगे की यात्रा के लिए शुभेच्छा देकर चला गया।

अब यह ४ बड़े बैग लेकर हमें लगभग १.५ किलोमीटर चल के जाना था। क्योंकि मेरे भाई और भाभी दोनों वहाँ काम करते हैं अतः दिन का समय होने की वजह से वे दोनों अपने-अपने ऑफिस में थे और हमें लेने नही आ सके। मेरी भाभी अपनी एक सहेली को कह गयी थीं हमें लेने आने के लिए परन्तु उन्हें कुछ अतिआवश्यक कार्य से बाहर जाना पड़ा और वह हमें लेने नहीं आ सकीं। उत्साह में हमने चलना शुरू तो कर दिया परन्तु उस दिन गर्मी बहुत अधिक थी और सामान के साथ चलने में तो और भी अधिक महसूस हो रही थी। कुछ ही दूर चलने के पश्चात ऐसा लगा जैसे अब नहीं चला जायेगा। मैंने हास्य में अपने पति से कहा क्या हमे यहाँ कोई लिफ़्ट नहीं दे सकता। वो मुझ पर हँसने लगे और बोले धीरे-धीरे चलो, पहुँच जायेंगे। थोड़ा और आगे चलने पर मैंने पीछे देखा तो अचानक ही एक कार मेरे पति के पास आकर रुकी और वह व्यक्ति मेरे पति से बात करने लगा। मैंने पीछे देखा तो मेरे पति ने मुझे इशारा करके बुलाया और कहा कि यह अंकल हमें घर तक छोड़ना चाहते हैं। वे लगभग ५० वर्ष के एक भारतीय थे, और उनसे बात करके पता चला कि वे काफ़ी समय से वहीं रह रहे

थे। मैं थोड़ा हिचकिचाई, पर गर्मी और सामान को देखते हुए राज़ी हो गई। फिर उन्होंने हमारा सारा सामान गाड़ी में रखवाया और हमें घर तक छोड़ दिया। हमने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि वे हमारे साथ घर के अन्दर भी आयें परन्तु बड़े प्यार से उन्होंने कहा कि अब उन्हें जाना चाहिए और वे चले गए|

जब शाम को मेरे भाई और भाभी ऑफिस से आये और हमने उन्हें यह किस्सा सुनाया तो वे दोनों मुस्कुराये और बोले यहाँ ऐसे कोई किसी अजनबी को लिफ़्ट देता नहीं है, मुझे नहीं पता तुम्हे कैसे दे दी। इस बात से मेरे मन में एक ख्याल आया कि कभी-कभी जब हम सच्चे मन से भगवान जी से कुछ अनायास ही मांग लेते है तो भगवान हमारी सहायता के लिए किसी न किसी रूप में आ कर हमारी सहायता कर जाते हैं। यद्यपि बात बहुत छोटी है परन्तु कुछ छोटी-छोटी चीज़ें भी जीवन भर के लिए एक सुखद अनुभव और ख़ुशी दे जाती हैं जो हमें कई बड़ी चीजें मिलने से भी अनुभव नहीं हो पाता।

रंगोली प्रतियोगिता 2019 की प्रथम पुरस्कार प्राप्त रंगोली के साथ विजेता समूह

हिंदी भाषा

नूपुर राजेश तिवारी
पत्नी- श्री राजेश चन्द्र तिवारी, सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी भाषा नहीं विचार है,
सभ्यता का प्रसार है।
देवनागरी, अवधी, मगही,
भोजपुरी, मेवाती,
ये सारी नदियां आ कर
इस सागर में मिल जाती।

सूर, रहीम, कबीर, तुलसी से
रत्न हिंदी ने जाये,
श्लोक, पद्य, दोहों, छंदों से
जीवन सत्य बताए।

मीरा को सुन प्रेम का होता है आभास,
राम सिया को सुन कर होता,
करूणा का अहसास।
राणा की सुन शौर्य गाथा,
मन पर रहता ना काबू।
सिर्फ कथाओं का नहीं है यह,
हिंदी भाषा का है जादू।

अलंकार, गद्यों, पद्यों
और रस में ऐसी मिठास,
चख ले जो भी एक बार वह,
भूल ना पाए स्वाद।

जैसी बोली वैसा लेखन वैसा ही है भाव,
कहो कहाँ है ऐसी भाषा,
इतना सरल स्वभाव।

इतनी सुन्दर भाषा का हम,
क्यों ना मान बढ़ाएँ,
चलो करें हम प्रण,
हिंदी को, सात समंदर पार ले जाएँ।

रंगोली प्रतियोगिता 2019 की तृतीय पुरस्कार प्राप्त रंगोली के साथ विजेता समूह

हे मानव!

नरेश सिंह,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

एक मानव जब अपनी जीवन-लीला की समाप्ति के पश्चात प्रभु के दरबार में पहुँचता है तब प्रभु मानव से उसके जीवन काल में किये हुए कार्यों का हिसाब मांगते हुए कहते हैं:-

हे मानुष! तू ही बता,

जीवन भर जो तूने किया;

इसमें सबसे पहले किसको मैं तोलूँ?

तेरे सत्य को असत्य से,

धर्म को अधर्म या अहिंसा को हिंसा से,

तेरे आदान को दान से,

अज्ञानता को ज्ञान से,

निंदा को स्तुति या मोक्ष को बंधन से,

प्रेम को ईर्ष्या से, निर्भिमान को अभिमान से

या फिर, सादगी को तोलूँ तेरी शान से।

हे मानव! सुन मेरी बातें,

तू क्यों खड़ा मूर्त सा मौन।

ज़िंदगी भर क्या-क्या किया,

जानता हूँ, और जानता हूँ है तू कौन।

क्यों नहीं सीखा जीवन में अपने;

ऋषि मुनियों के त्याग-तप से,

महापुरुषों के गौरवशाली ज्ञान से,

देश पे मर-मिटे शूरवीरों के बलिदान से।
नीर, पवन, वृक्ष, धरा से नहीं सीखा।
हर के जीवन में इनके निश्छल योगदान से,
अज्ञानता में आँखें मूँद, बुद्धि को नहीं सँवारा;
सभी जीवन में पा श्रेष्ठ ये जीवन,
क्यों नही सृष्टि के बहुरंगो को संवारा?
तू ही बता मानव जीवन में,
मानवता से मुख मोड़ता कौन?
मैं पूछ रहा बारंबार;
पर सिर झुका तू खड़ा है मौन?
मैं जानता हूँ, तू है कौन।

हे मानव!
भौतिक सुख की खातिर तूने
त्याग आध्यात्मिकता भौतिकता का अंबार लगाया,
जीवन भर निन्यानवे के फेर में
न जाने किस-किस को दुख पहुंचाया,
मात-पिता की नहीं की सेवा
बात-बात पर दर्द पहुंचाया,
रिश्ते-नाते पड़ोसी छकाये,
घर द्वार पर आए साधू-संत भिक्षु लौटाये,
जीव-जन्तु भी बहुत सताये,
नहीं कभी वृक्ष पौधों को सींचा,
मानवता में नहीं है कर्म इससे नीचा।

तू ही बता अब क्यों है मौन?
मैं जानता हूँ, तूने क्या किया और है तू कौन।
जीवन भर, मैं, मेरा, अपना,
इसमें ही तू सिमट गया।
नैतिकता व मानवता का मूल्य,
इस सिमटन में मिट गया।
झूठे आत्म-बोध से मिलकर,
क्या पाया, क्या खो बैठा।
मैं मेरा अपने में ही तू,
अनमोल मानुष जीवन को खो बैठा।
तू ही बता तेरे कर्मों की
सजा भुगतेगा कौन?
मैं पूछता हूँ तुझसे,
तू अनसुनी कर खड़ा है मौन।
तू बता तेरे कर्मों की
सजा अब भुगतेगा कौन?
सजा अब भुगतेगा कौन?

संविधान हमारी पहचान

निहारिका उप्पल
वरिष्ठ लेखाकार

यह कविता हमारे विश्व में महान संविधान की एक कहानी की तरह है जो संविधान के निर्माण, उसके पीछे का परिश्रम तथा उसके महत्व की एक झलक देती है।

आज़ाद हुआ भारत और यही सोच तब आई,

9 दिसंबर 1947 को संविधान की घोषणा करवाई।

166 दिवस की मेहनत रंग लाई,

284 सदस्यों ने अद्‌भुत भूमिका निभाई ॥

26 जनवरी 1950 को लागू हुआ संविधान,

प्रस्तावना से हुआ संविधान का मान।

"हम भारत के लोग" – से हुई शुरुआत,

एक हैं हम सब, हुआ यह विश्वास ॥

डा. आंबेडकर ने किया संविधान का निर्माण,

सबको जोड़कर दी संविधान को पहचान।

395 अनुच्छेद, 8 अनुसूचियाँ और 22 भाग,

विश्व में सबसे बड़ा हुआ भारत का संविधान ॥

लोकतंत्र और गणतंत्र सबका यह सार है,

स्वतंत्रता, समानता तथा धर्मनिरपेक्षता का अंबार है।

न्याय और अखंडता द्वार है,
संविधान से भारत महान है ॥

ना जाति, ना धर्म, निष्पक्षता ही नींव है,
कानून, कर्तव्य और अधिकार इसमें सजीव है।
नागरिकों की पहचान और शहीदों का मान है,
हमें गर्वित करता भारत का संविधान है ॥

साध्य परंतु मज़बूत है, राष्ट्र हित का द्वीप है,
सशक्त करता भारतीयों को, एकता का प्रतीक है।
कोई कर ले चाहे कोशिश भारत को तोड़ने में, नाकाम है,
हम भारतीयों की रक्षा करता हमारा संविधान है ॥

चल देना

निहारिका उप्पल
वरिष्ठ लेखाकार

चाहे हो समंदर गहरा,
या समय लगे बस ठहरा।
कुछ ख़ुद पर यकीन बना कर,
चल देना ....चल देना ॥

संघर्ष भले हो पथ पर खड़े,
पर योद्धा कैसे ना लड़े।
तुम शूरवीर हो यह जानकर,
चल देना ....चल देना ॥

कहीं भूचाल कहीं द्वंद होगा,
तुझे रोकने को वह समस्त होगा।
पर होकर निडर अपनी लय में,
चल देना ....चल देना ॥

लड़खड़ाएगा और व्याकुल भी होगा,
कठिनाई देख विचलित भी होगा।
पर कोशिशों का आश्रय ले,
चल देना ....चल देना ॥

जब आशायें दिल में हों भरी,
अरमानों की हो एक लड़ी।
तो कदमों को रोके बिना,
चल देना ....चल देना ॥

वह मंज़िल भी बेहतर होगी,

वह सुबह भी स्वर्णिम होगी।

एक यही हसरत लिए राही,

चल देना ....चल देना।

सुश्री महालक्ष्मी मेनन, अपर उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी संग्रहालय में

पर्यावरण नैतिकता

प्रकाश महावर
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

कभी-कभी किसी कार्य को करने में हमारा लाभ होने पर भी हमारे मन में यह सवाल आता है कि क्या यह कार्य करना उचित है? यह उचित और अनुचित का फ़र्क नैतिकता से आता है। नैतिकता हमें अच्छे और बुरे का बोध कराती है। नैतिकता समाज का वह तत्व है जिसकी उपस्थिति से सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। नैतिकता में यह भाव भी समाहित है कि अमुक कार्य अनुचित है अतः उसे नहीं करना चाहिए। नैतिकता ही मानव और पशु में अंतर है। नैतिकता का यह दायरा इतने तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि इसका दायरा तो बहुत विशाल है |

नैतिकता को जीवन के हर एक पहलू के साथ जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए प्राकृतिक संसाधनों को ही लें तो इनके बढ़ते उपयोग को लेकर गांधीजी ने कहा था कि ऐसा समय आएगा जब अपनी ज़रूरतों को कई गुना बढ़ाने की अंधी दौड़ में लगे लोग अपने किए को देखेंगे और कहेंगे, ये हमने क्या किया? और उनका यह कथन सत्य हुआ। आज पूरा विश्व ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर चिंतित है। जिसका कारण प्रकृति का अंधाधुंध दोहन है। बढ़ते हुए अनेक प्रकार के प्रदूषण, मनुष्य की गलतियों के कारण होने वाली प्राकृतिक आपदाएँ, वातावरण में ओज़ोन की परत में छेद, पृथ्वी से लुप्त होती जा रही विभिन्न जीव जन्तुओ की प्रजातियाँ जैसे अनेक कारणों से आज पर्यावरण नैतिकता (Environmental Ethics) अधिक चर्चा में है|

पर्यावरण नैतिकता 1970 के दशक की शुरुआत में सामने आई, जब पर्यावरणविदों ने दार्शनिकों से पर्यावरण संबंधी समस्याओं के दार्शनिक पहलुओं पर विचार करने का आग्रह करना शुरू किया। पर्यावरण नैतिकता अर्थात मनुष्यों और पर्यावरण के बीच का नैतिक संबंध। यह प्रकृति के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों से संबन्धित है। पर्यावरण नैतिकता का दायरा पर्यावरण के बचाव से काफी विशाल है। मनुष्य प्रकृति पर अपना अधिकार समझकर उसका उपयोग करता है तो इसी के साथ मनुष्य का यह भी कर्तव्य बनता है कि पर्यावरण को सुरक्षित रखने, संरक्षित रखने और बनाए रखने में भी उतना ही बढ़ चढ़ कर अपनी भूमिका अदा करे। नैतिकता यह भी है कि हमें जिस चीज़ की जितनी जरूरत हो उतना ही उसे उतनी इस्तेमाल करें। अब जैसे हम पानी की बात करें तो सामान्य नैतिकता है कि पानी हमारे उपभोग के लिए है

तो हम उसका अपनी आवश्यकता से ज्यादा उपयोग न करें। उदाहरण के लिए हम पानी पीते हैं तब पूरा गिलास भर पानी लेते हैं और दो घूंट पी कर बाकी बेसिन में बहा देते हैं। हम इसी प्रकार की आदतों को सुधार कर पर्यावरण नैतिकता को बढ़ा सकते हैं |

पर्यावरण नैतिकता का मानव-केंद्रित दृष्टिकोण मनुष्यों को ब्रह्मांड के केंद्र में रखता है; इसलिए, बाकी सब के अस्तित्व का मूल्यांकन हमारे लिए इसकी उपयोगिता के संदर्भ में किया जाना चाहिए। इसके अनुसार पर्यावरण सम्बन्धी चिंताएँ केवल इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि ये मनुष्यों को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, प्रदूषण स्वास्थ्य को क्षीण करता है, संसाधनों का ह्रास जीवन स्तर के समक्ष संकट उत्पन्न करता है तथा जलवायु परिवर्तन मानव जीवन और आजीविका के समक्ष खतरा उत्पन्न करता है। समग्र रूप में, मानव केन्द्रित नैतिकता यह दावा करती है कि पर्यावरण का सम्मान करना हमारा दायित्व है ताकि मानव कल्याण और समृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

पर्यावरण नैतिकता को बनाये रखने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

- पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं का उपयोग करना
- सभी को पर्यावरण शिक्षा देना
- भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण करना
- जानवरों के पर्यावरणीय अधिकार को बनाये रखना
- पर्यावरण को साफ़ और स्वच्छ रखना
- जानवरों को अनावश्यक हानि न पहुँचाना
- पर्यटन को पर्यावरण अनुकूल बनाना
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लोगों के मध्य समानता लाना
- सतत विकास (Sustainable Development) के लिए प्राकृतिक संसाधनों का न्यायोचित उपयोग करना
- पर्यावरण प्रभाव का आंकलन करना एवं पर्यावरण अनुकूलन के लिए आवश्यक कदम उठाना
- पर्यावरण की सुरक्षा में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाना

पूरा विश्व प्रति वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस (World Environment Day) मनाता है। पर्यावरण को सुरक्षित रखने व बचाने के लिए वर्ष भर अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, परंतु कोविड- 19 के चलते लॉकडाउन (Lock-down) के कारण पर्यावरण को जितना फ़ायदा पहुंचा है उतना शायद ही कभी हुआ हो। यदि हम इससे सीख लेकर भविष्य में पर्यावरण नैतिकता का ख्याल रखें तो निश्चय ही हम अपने पर्यावरण को न सिर्फ़ बचा पायेंगे बल्कि पर्यावरण का मानव के विकास के लिए महत्तम उपयोग भी कर पायेंगे।

कार्यालय की बोपल स्थित कॉलोनी में वृक्षारोपण करते कार्यालय के सदस्य

बेटी

प्रदीप कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

लुट गया हो जैसे सब, आँखें थीं सबकी नम,
जन्म लेते ही एक बेटी के, छा गया था ग़म।
उस नन्ही परी को क्या पता था, सब उसके जन्म से दुखी हैं,
यहाँ तो सबको मिलती बेटे के जन्म में ही खुशी है।
लेकिन वो इन सब से अंजान लेटी हुई निःस्वार्थ मुस्कुरा रही है,
देख उसकी मुस्कुराहट परिवार की मोहब्बत कुछ-कुछ बढ़ती जा रही है।

कल यही बेटी माँ-बाप का नाम रोशन करेगी,
एक अच्छी खिलाड़ी, डॉक्टर, इंजीनियर और एस्ट्रोनॉट बनेगी।
जब छोड़ आँचल अपनी माँ का,
ससुराल ये बेटी जाती होगी,
माँ की याद तो उसको भी सताती होगी,
फिर भूल सब, अपने परिवार की मान-मर्यादा का कर ख़्याल ,
अपने कर्तव्य में जुट जाती होगी।

यही बहू, माँ और एक सास बनेगी,
सबको रख खुश, सबके दिल के पास रहेगी।
ख़ुद दुखी हो या सुखी,
सबको खुशियाँ ही बांटेगी।
अब पति ही उसकी दुनियाँ और सास-ससुर में संसार दिखे,
आखिर उसके भी हैं कुछ सपने कोई उसे भी तो पलकों पर रखे।

कार्यालय में टेबल टेनिस टूर्नामेंटों का आयोजन

पवन सिंगला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं
कुशल संगतानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जनवरी 2020 में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग वेस्ट-ज़ोन एवं इंटर-ज़ोनल टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2019-20 का आयोजन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.ले.प.), गुजरात अहमदाबाद द्वारा किया गया।

दोनों प्रतियोगिताओं में कुल 18 कार्यालयों से 100 पुरुष एवं महिला खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। दोनों प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रधान महालेखाकार कार्यालय – अहमदाबाद के ऑडिटोरियम में आई.टी.टी.एफ. से प्रमाणित मेजों पर किया गया। फिक्सचर का निर्धारण मुख्यालय और अन्तराष्ट्रीय टेबल टेनिस संघ के विनियमों के आधार पर किया गया तथा निर्णेता और रेफरी का नामांकन सी.ए.जी. कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा किया गया जिनमें कुछ अंतर्राष्ट्रीय अनुभव वाले भी थे।

वेस्ट-ज़ोन टूर्नामेंट का उद्घाटन प्रधान महालेखाकार महोदय श्री एच. के. धर्मदर्शी द्वारा 04.01.2020 को किया गया। निम्नलिखित टीम और खिलाड़ियों ने वेस्ट-ज़ोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2019-20 में जीतहासिल करके इंटर-ज़ोनल टेबल टेनिस टूर्नामेंट में प्रवेश सुनिश्चित किया:

टीम इवेंट :

1) महालेखाकार कार्यालय, मुंबई
2) महालेखाकार, कार्यालय, राजकोट

पुरुष एकल

1) शुभम ओझा, म.ले. कार्यालय, भोपाल
2) विवेक भार्गव, म.ले. कार्यालय, राजस्थान
3) ज़ुबिन तारापोरवाला, म.ले. कार्यालय, मुंबई
4) हर्ष सचनंदनी, म.ले. कार्यालय, भोपाल

महिला एकल

1) पूजा शर्मा, प्र.म.ले. कार्यालय, अहमदाबाद
2) हिमानी भट्ट, म.ले. कार्यालय, ग्वालियर

अनुभवी 40+ एकल

1) सिकंदर जाम, म.ले. कार्यालय, राजकोट

2) संतोष खिरवाडकर, म.ले. कार्यालय, भोपाल

अनुभवी 50+ एकल

1) बसब चौधरी, म.ले., छत्तीसगढ

2) राजेश आनंद, म.ले., राजस्थान

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में किया गया।

इंटर-ज़ोनल प्रतियोगिता का उद्घाटन प्रधान महालेखाकार द्वारा दिनांकः 11.01.2020 को किया गया। निम्नलिखित टीम और खिलाड़ियों ने इंटर-ज़ोनल टेबल टेनिस टूर्नामेंट की विभिन्न श्रेणियों में जीत हासिल की:

टीम इवेंट :

1) महालेखाकार कार्यालय, वेस्ट बंगाल (बी) (विजेता)
2) महालेखाकार कार्यालय,वेस्ट बंगाल (ए) (रनर-अप)
3) महालेखाकार, तमिलनाडु, (सेमी फाइनलिस्ट)
4) महालेखाकार, मुंबई, (सेमी फाइनलिस्ट)

पुरुष एकल

1) विजेता : सैदुल आलम अहमद, म.ले. कार्यालय, असम
2) रनर-अप : शिवाजी रॉय, म.ले. कार्यालय, वेस्ट बंगाल (बी)
3) तृतीय स्थान : अभिमन्यु मित्रा, म.ले. कार्यालय, वेस्ट बंगाल (बी)
4) चतुर्थ स्थान : जयदीप दास, म.ले. कार्यालय, वेस्ट बंगाल (ए)

महिला एकल

1) विजेता : पूजा शर्मा, प्र.म.ले. कार्यालय, अहमदाबाद
2) रनर-अप :हिमानी भट्ट, म.ले. कार्यालय, ग्वालियर
3) तृतीय स्थान :सयंतिका कुंडू, म.ले. कार्यालय, वेस्ट बंगाल (बी)
4) चतुर्थ स्थान :सान्या सहगल, कार्या. म.नि. ले.प. (के. व्यय), दिल्ली

अनुभवी 40+

1) विजेता : अबू रिज़वान, म.ले. कार्यालय वेस्ट बंगाल (बी)
2) रनर-अप : के. श्रीवत्स चक्रवर्थी, म.ले. कार्यालय तमिलनाडु
3) तृतीय स्थान : सिकंदर जाम, म.ले. कार्यालय, राजकोट
4) चतुर्थ स्थान : जोगिन्दर एस. बिष्ट,कार्या. म.नि. ले.प. (के.व्यय), दिल्ली

अनुभवी 50+

1) विजेता : बसब चौधरी, म.ले. कार्यालय, छत्तीसगढ़
2) रनर-अप : हरीश कक्कड़, म.ले. कार्यालय, हरियाणा
3) तृतीय स्थान : डी. सुरेन्द्रनाथ, म.ले. कार्यालय, तमिलनाडु
4) चतुर्थ स्थान : जयंता मंडल, म.ले. कार्यालय, वेस्ट बंगाल (बी)

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन प्रधान महालेखाकार महोदय एवं पूर्व अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस खिलाड़ी श्री देवेश करिया की उपस्थिति में किया गया। श्री देवेश करिया जी ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न टेबल टेनिस टूर्नामेंटों में कांस्य, सिल्वर और गोल्ड मेडल प्राप्त कर देश का मान बढ़ाया है।

इन टूर्नामेंटों के दौरान कार्यालय को विभिन्न प्रकार के फूलों से अच्छी तरह सजाया गया तथा कार्यालय परिसर में टेबल टेनिस को चित्रित करते हुए एक रंगोली भी बनाई गई। कार्यालय के सदस्यों ने खेल के दौरान सभी खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया और टूर्नामेंट को सफल बनाने में सहयोग दिया। प्रतियोगिता में शामिल खिलाड़ियों, निर्णायकों एवं तकनीकी सदस्यों ने टूर्नामेंटों के आयोजन में इस कार्यालय के प्रयासों एवं सुचारु व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा की और इस कार्यालय को धन्यवाद दिया|

पहला कदम

प्रवीण कुमार झा,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

स्कूल का तुम्हारा पहला दिन,
नए जीवन का पहला दिन है,
एक नई रोशनी, एक नई सोच की ओर,
एक नई दुनिया, तुम्हारे नए सपनों की ओर,
ये तुम्हारा बढ़ता हुआ नया कदम है।

तुम्हें स्कूल के लिए अनुकूल बनाने,
तुम्हारे अनुकूल हो स्कूल भी तुम्हारा,
इन ख़्यालों में पिछली रात का जागना,
कल की तैयारियों में हम सबको नींद न आना,
तुम्हारी जागृति की ओर पहला कदम है।

तुम्हें स्कूल छोड़ लौटी तुम्हारी माँ,
और उसके मन में सभी चिंताएँ, सभी सवाल,
तुम्हारे बेपरवाह उड़ने, बेखौफ़ चलने के लिए,
तुम्हारे मासूम सवाल और उन पर हमारे ख़्याल ,
इस ज़िंदगी के सवालों का, पहला कदम है।

तुम भी जाओगी स्कूल हर बच्चे के जैसे,
मगर दुआ इतना करेंगे हम सब कि,
तुम मेरे या किसी के सपने को न जियो ,
तुम जियो सिर्फ़ अपने सपनों को,
तुम्हारे सपनों की उड़ान का, ये पहला कदम है।

तुम बड़ी हो गई जबसे जाना ये हमने,
सबकी आखों में तुम्हारे सपनों के ही सपने हैं,
तुम्हारे लिए दिल से दुआएं निकलती रहेगी हमेशा,
तुम खुश हो, नई उड़ान उड़ो और चमक उठो,
सबके दिल में बस जाने की ओर, ये पहला कदम है।

तुम्हें जीना है सिर्फ़ अपने सपनों को,
तुम्हें भरना है अपने सभी सपनों में रंग भी,
तुम बेपरवाह उड़ना हमारी आद्या, हम तुम्हारे साथ खड़े हैं,
ख़ुशी और मुक़ाम तक के ऊंचे सपनों की उड़ान,
की तरफ़ बढ़ता हुआ, ये तुम्हारा पहला कदम।

नि:स्वार्थ सेवा

प्रवीण कुमार सिसोदिया
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

ऐसा कहा जाता है कि जब हम किसी को कुछ नि:स्वार्थ भाव से देते हैं तो भगवान जी हमें उससे कहीं अधिक देते हैं। सभी प्राणियों में मनुष्य एकमात्र ऐसा प्राणी है जो स्वयं दूसरों की सहायता नि:स्वार्थ भाव से कर सकता है। परन्तु आज के इस भौतिकतावादी युग में बहुत से लोग दूसरों को कुछ देने में और सहायता करने में सिर्फ इसलिए घबराते हैं कि यदि वे अपनी कीमती वस्तुओं में से किसी को कुछ दे देंगे तो उनके पास उस वस्तु की कमी हो जाएगी। परन्तु भौतिकतावादी सुखों में हम प्रकृति का यह शाश्वत नियम भूल जाते हैं और अपने शास्त्रों एवं गुरुजनों की शिक्षा को भूल जाते हैं कि दूसरों के साथ खुशियाँ बाँटने से, उनकी नि:स्वार्थ भाव से मदद करने से हमारा स्वयं का भी भला होता है, मन को भी शांति मिलती है।

उपर्युक्त बातों को हम एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं। एक गाँव में एक बुजुर्ग व्यक्ति रहता था जिसके ३ पुत्र थे। जब उस व्यक्ति का अंत समय निकट आया तो उसने अपने पुत्रों को बुला कर कहा कि जब मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊं तो मेरे पास जो भी है उसे तुम तीनों भाई आपस में बाँट लेना। उसने सबसे बड़े पुत्र से कहा कि मेरे पास जो भी है उसका आधा हिस्सा तुम्हारा, एक तिहाई हिस्सा मँझले पुत्र का तथा १/९ हिस्सा सबसे छोटे पुत्र का होगा। थोड़ी देर बाद उस बुजुर्ग व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। पिता के जाते ही उन्होंने अपनी संपत्ति का हिसाब लगाया तो समझ में आया कि जिस तरीके से पिताजी संपत्ति बाँटने के लिए कह गये है वह संभव ही नहीं है। उस बुजुर्ग व्यक्ति के पास १७ गायें थीं जिनका विभाजन पिताजी के बताये अनुसार हो ही नहीं सकता था। काफी विचार विमर्श के पश्चात् वे अपने पिता के मित्र के पास सलाह लेने पहुंचे। जब उनके मित्र को यह बात पता चली कि उनके मित्र की मृत्यु हो गयी है तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ परन्तु यह जान कर कि उनके पुत्र ऐसे समय पर भी संपत्ति बाँटने के समाधान के लिए उनके पास आये हैं, उन्हें और अधिक दुःख हुआ। परन्तु क्योंकि वे उनके प्रिय मित्र के लिए अंतिम समय में कुछ कर न सके,उन्होंने सोचा चलो मैं उनके पुत्रों की मदद कर देता हूँ ताकि उनमें आपस में संपत्ति को लेकर मतभेद न हो। यह सोचकर उन्होंने उनकी समस्या पूछी और यह जान कर कि १७ गायों को पिता के बताये अनुसार बाँटा नहीं जा सकता, उन्होंने उनके पुत्रों को मिलकर साथ रहने की सलाह दी परन्तु किसी भी भाई को उनका प्रस्ताव पसंद नहीं

आया। अंत में उन्होंने उन पुत्रों से कहा मेरे पास १ ही गाय है, यदि मैं तुम्हे वो दे दूँ तो तुम्हारी समस्या हल हो जाएगी जैसे ही उन्होंने १८ गायों का पिता के कहे अनुसार बंटवारा किया उनका काम आसानी से हो गया और आश्चर्य कि उनके पिता के मित्र की गाय भी बँटवारे के पश्चात् बच गयी और उन्हें लौटा दी गयी।

अक्सर हम देखते हैं कि लोग किसी को कुछ दान देते हैं या दक्षिणा देते हैं तो खूब बढ़-चढ़ कर इसका प्रचार भी करते हैं। परन्तु इस तरह से किये हुआ दान या सहायता के पीछे हमारा स्वार्थ छुपा होता है। हम चाहते हैं लोगों को पता चले कि हम कितने महान हैं। वास्तव में यदि हम किसी की मदद करना चाहते हैं तो इस तरह करनी चाहिए कि एक हाथ से यदि किसी को कुछ दें तो दूसरे हाथ को भी पता न चले कि हमने किसी को कुछ दिया। यदि हम जीवन में इन सभी चीज़ों से ऊपर आ जाते हैं और निःस्वार्थ रूप से किसी की भी सहायता करते हैं तो ईश्वर हमारी निःस्वार्थ सेवा और प्रेम भाव की हमेशा क़द्र करते हैं। उनके हिसाब-किताब में हमारे कर्मों का लेखा-जोखा तथा निःस्वार्थ सेवा यूं भी आ रही है तो फिर क्यों हम दुनिया को हिसाब देना चाहते हैं कि हमने किसके लिए क्या किया। हमें जीवन में जब भी अवसर मिले तो किसी भी ऐसे व्यक्ति की मदद अवश्य करनी चाहिए जो हमारी सहायता के बदले हमे कुछ दे न सके। इससे हमारी सुख संपत्ति कम नहीं हो जाती परन्तु इस कार्य से जो मन की शांति और ख़ुशी मिलती है उसको शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है। यही सच्ची निःस्वार्थ सेवा है|

माँ

प्रशांत शुक्ला
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

क्या लिखूँ तेरी ममता, प्रणय पर ओ माँ,
शब्द सीमित रहे, कल्पना कुछ नहीं॥
तू विधाता की ऐसी है अनुपम कृति,
सन्निहित जिसमें सब रंग, सारी वृत्ति,
कर्मपालन ही यदि सृष्टि का आधार है
तू प्रसूता सभी कर्मों की कुदरती।
पाठशाला प्रथम, दक्षिणा शून्यतम,
शिक्षणम उच्चतम, कामना कुछ नहीं॥ क्या लिखूँ...

प्रेम में त्याग की ऐसी प्रतिमा गढ़ी,
त्याग-प्रतिरूप को तूने धूमिल किया,
प्रेम की हद ही यदि भक्ति का द्वार है,
तूने भगवान को, मुझमें शामिल किया॥
ज्ञान तू बुद्ध का, वाणी गीता की तुम,
आचरण राम का, पर जताना नहीं॥ क्या लिखूँ...
गंध-गौरव मिली जब भी लौटा सफल,
मैं पराजित हुआ, हर्ष के द्वंद में।
हार जब भी मिली, ज्ञान संयम दिया,
औषधि कैसी यह, शौर्य के दंभ में॥
छांव में ताप में, सुख में संताप में,
ग्लानि में ख़्वाब में, साथ तू ही रही॥ क्या लिखूँ...

सोचे बचपन मेरा, मैं हो जाऊँ बड़ा,
ऋण उतारूँ तेरा ऐसा अभिमान था,
छद्म साज़ों में तन ऐसा बंदी हुआ,
मन कहे तू कभी कितना, नादान था।
आये कितने प्रबल, आये कितने कुशल,
माँ के ऋण से उऋण, हो जना ही नहीं॥ क्या लिखूँ...

रंगोली प्रतियोगिता में प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़) कार्यालय की टीम के सदस्य

मैं बेटी हूँ मुझे बेटी ही रहने दो

बिनय कुमार
बहु कार्य कर्मचारी

जब मैं बच्ची थी, पूरे आँगन में
तितली की तरह घूमती रहती थी।
कभी बरसात के नावों के साथ तो
कभी बसंती हवाओं के साथ बहती रहती थी।
वो भी क्या दिन थे, क्या घर, क्या बाहर,
हर तरफ मस्ती थी।

ना दोस्त मतलब के थे,
ना मतलब की दोस्ती थी।
वास्तव में मैं एक बेटी हूँ,
मुझे बेटी रहने दो।
दूसरों की बातें छोड़ो
मुझे अपनी कुछ कहने दो।
मैं बेटी हूँ.......

जैसे-जैसे बड़ी हुई,
शादी की समस्या खड़ी हुई,
राजकुमारी जैसा रखूँगा,
यह बोलकर ले गया मुझे ससुराल,
फिर सास-ननद के तानों को सुनकर,
मेरा हुआ बुरा हाल।

इससे तंग आकर मैंने पढ़ने की ठानी,
कुछ बनके अपनी अलग है एक पहचान बनानी।

इस क्रम में कई समस्याएँ आईं,
कभी ग़ैरों ने तो कभी अपनों ने टांग अड़ाई,
फिर भी मैं डटकर खड़ी रही न घबराई।
आखिरकार वह घड़ी भी आई,
जिसकी मैंने थी कल्पना सँजोई,
कलेक्टर बनके आलोचकों की ज़ुबान बंद कराई।

इसलिए मुझे सभी सहेलियों से है यही कहना,
छोड़ो चारदिवारी के पीछे रहना।
तभी तुम कुछ कर सकती हो,
अपना एक अलग इतिहास रच सकती हो।
पूरे घर की जान होती हैं बेटियाँ,
दो कुलों का मान होती हैं बेटियाँ।

इसलिए,
अब न बनाओ कोई नया किस्सा
बेटियों को भी दो समाज में हिस्सा।

सरकारी मधुमक्खी का छत्ता

मौलिक पटेल
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

फ़ाइलों के ढेर। मिलने आने वालों की तादाद। टेलीफोन की घंटियाँ। बड़े साहब की सूचनाएँ। फ़ाइलों पर दस्तखत करवाने के लिए सर पे मंडराते हुए कर्मचारी|

बस फिर से एक नए दिन की शुरुआत। कार्यालय पहुँचते ही कुलबुलाहट शुरू। फ़ाइलों और मुलाकातियों को निपटाते-निपटाते पूरा दिन कहाँ चला जाए पता ही नहीं चलता। पाटिल, दुबे, अमीन और दूसरे सारे कर्मचारी वैसे तो होशियार हैं। पाटिल के अलावा और किसी को ज़्यादा नहीं कहना पड़ता। कुछ तो ज़रूरत से ज़्यादा होशियार हैं। इनमें मुझे दुबे की चतुराई पर कुछ विशेष आदर है। पर हाँ, उसके मामले में सतर्क भी उतना ही रहना पड़ता है।

'सामान्य कार्यालय प्रबंधन' अनुभाग का ज़िम्मा मेरे सर पर है। अनुभाग का काम कार्यालय की सामान्य व्यवस्थाओं को संभालना है जिससे कि कार्यालय का कार्य सामान्य रूप से चलता रहे। पर ये सारे सामान्य कार्य कभी-कभी असामान्य जान पड़ते हैं। एक दिन चौधरी चौकीदार एक फटीचर से आदमी को पकड़ लाया। चौधरी भाई का काम कार्यालय के द्वार पर चौकीदारी करना था पर वो कभी भी अपने स्थान पर नहीं पाये जाते थे। एक्स-आर्मीमेन थे इसलिए आर्मी की थोड़ी अच्छी-बुरी आदतों का असर भी दिख जाता। कभी आप निकलो तो सैल्यूट भी मार दे; कभी-कभी आपको पता भी चल जाए कि साब दो घूंट मारकर आए हैं। उनकी मेरे केबिन में सीधे ही घुसने की आदत है। जब भी घुसे, सीधा बोलना चालू कर दे। बात की शुरुआत करे, बात के तार जोड़ते-जोड़ते अपने दिमाग के तार टूट जाएँ।

बोलो चौधरी भाई। क्या था? मैंने उनको जल्दी निपटाने के भाव से पूछा। साहब अपुन इसकु पकड़ कर लाया है। इनको क्या प्रैक्टिस होने को मांगता। मुझे लगा साहब को बोलते है। अगर आप बोलो तो 'मध' (शहद) उतार लें क्या? चौधरी ने अपनी बंबइया स्टाइल में शुरू किया।

किसके बारे में बोल रहे हो। मैंने नाराज़गी के भाव से पूछा।

साब। यह मध है ना।

चौधरी ने ऐसे पूछा जैसे मैं यत्र-तत्र-सर्वत्र की जानकारी एकत्रित किए हुए बैठा हूँ।

कहाँ?” मैंने कुछ नाराज़ होकर पूछा।

पाँचवीं मंज़िल पर, उसने अपनी रफ़्तार जारी रखकर जवाब दिया।

हाँ, तो?” मैंने बात खत्म करने के सुर में पूछा।

तो इसकु प्रैक्टिस है ना। चौधरी ने फिर गुगली डाली।

काहे की प्रैक्टिस? दिमाग के तार टूट जाने के बावजूद मैंने धैर्य रखकर उसको पूछना चाहा पर मैं भी उसकी स्टाइल में पूछ बैठा।

वो मध उतार कर ले जाएगा। वो क्या है ना लोगों को मधुमक्खियाँ बहुत काट रेली हैं।

तो मुझसे क्या चाहते हो? मैंने तंग आकर पूछा।

आप बोले तो... अपने वक्तव्य को अधूरा छोड़ वो प्रश्नार्थ मुद्रा में आ गया।

तो इसमें मेरी परमीशन की कहाँ ज़रूरत है? अगर वो ले जा रहे हैं तो ले जाने दे ना। मैंने बात निपटाने के भाव से कहा। मेरी केबिन से हो रहे वार्तालाप को बाहर बैठा दुबे ध्यान से सुन रहा होगा।

एक मिनट साहब, दुबे ने मेरे केबिन में एंट्री मारी। बात संभालते हुए सीधे उस आदमी की ओर मुड़कर पुलिस इंटेरोगेशन स्टाइल में पूछा।

बोल क्या लेगा?

मज़दूर अपनी गरीबी का पूरा प्रदर्शन करते हुए: इसमें का लेने का बाबूजी। उतारने के ढाई सौ रुपए दे दीजिएगा।

और मध का क्या? दुबे ने रूखेपन के साथ पूछा।

मध का क्या साहब। पचास-सौ रुपए मिलत हैं। मज़दूर ने लाचार आवाज निकालकर ....इस लहज़े में अपना पक्ष रखने की कोशिश की।

दुबे- कितना शहद निकलेगा? (गब्बर सिंह स्टाइल में)

साहब उसका तो क्या है, कभी पाँच सौ भी निकले कभी किलो भी। मज़दूर ने आंकड़ा रखने से पहले पूरा समय लिया। इतनी चर्चा होते-होते तो बाकी का स्टाफ भी मेरे केबिन में एक-एक करके एकत्र हो गया। चाय मंगायी गई। फ़ाइलों के ढेर के बीच मीठे शहद की महाभारत चालू हो गई। सरकारी काम-काज को हमेशा की तरह धकेल दिया गया।

दुबे- ठीक है। तू बाहर बैठ, मैं बुलाता हूँ तुझे, दुबे ने शहद वाले को बाहर जाने का हुक्म दिया। उसके जाने के बाद दुबे मेरी ओर मुड़ा।

सर ये लोग बहुत होशियार होते हैं। दुबे के कम्प्यूटर दिमाग ने ढेर सारी गिनती पलक झपकते ही कर ली थी | उसने फिर शुरू किया। साहब, यह तो शुद्ध शहद होता है। एक छत्ते से 15-20 किलो ग्राम शहद तो आराम से निकलता है। शहद का भाव मालूम है? दुबे ने ऐसे पूछा जैसे कि शहद का बहुत बड़ा व्यापारी हो। और कौन बनेगा करोड़पति में पूछे गए सवाल की तरह सब ने शहद के भाव पर अटकलें लगाई।

अब रोज़ कोई शहद के भाव पर नज़र रखकर तो बैठा नहीं है। और शहद रोज़-रोज़ खाता भी कौन है! पर हर किसी को शहद के कीड़े ने काटा। ऊपर नीचे सब मिलाकर 15 का स्टाफ़ तो इकट्ठा हो ही गया था। शहद की शुद्धता से लेकर 'डाबर' के शहद में भी चाशनी की कैसी मिलावट होती है, इस चर्चा ने ज़ोर पकड़ा। फ़ाइलें बाज़ू पर रह गईं। मधुमक्खियों ने मानो जैसे मेरे केबिन में छत्ता लगा लिया हो। दुबे ने अमीन की टेबल पर जा कुछ मसलतें की। सस्पेंस का जैसे प्लॉट जमा। पाटिल बकवास करने लगा। थोड़ी देर में दुबे आया।

सर आप सब मुझ पर छोड़ दें। मैं सब संभाल लूँगा।

"कहाँ गया ओ; दुबे मधुमक्खी वाले को बुलाते हुए बोला।

सुन। एक काम कर। तुझे मजदूरी के 400 रुपए दे देंगे। शहद निकालकर बर्तन में निकालकर दे देने का। बोल, क्या बोल रहा है?

छत्ता उतारनेवाला गिड़गिड़ाया। हाथ जोड़कर बोला- साब कहाँ गरीब आदमी की रोज़ी-रोटी पर हाथ डाल रहे हो?

पर भाई तुझे बताया किसने कि यहाँ पर एक छत्ता है? मैंने छत्ते वाले से सवाल किया। वो कुछ बोले इससे पहले ही चौधरी बीच में कूदा।

वो तो ये इधर से गुजर रेला था तो मैंने उसकु बोला कि ये मध गिरा के दे इसके वास्ते अपुन इसकु ले के आया।

"पर आपको कैसे पता कि ये छत्ते वाला है?" मेरे मन में सवाल उठ रहे थे।

वो कैसे नहीं मालूम होएगा साहेब। पहले भी गुप्ता साब के टाइम इसने गिराके दिया था।

मैं- तो उस वक्त क्या किया था?

चौधरी- वो तो नहीं मालूम मेरेकु।

ये सब जाने दो ना सर। ए चल बोल, कल सुबह आ जा और छत्ता गिरा कर शहद निकाल के दे। दुबे ने फिर बाज़ी संभाली।

मुश्किल से यह झमेला मेरी केबिन से रवाना हुआ। 'सामान्य कार्यालय प्रबंधन अनुभाग' का एक और असामान्य कार्य।

अचानक अमीन ने याद दिलाया, पर कल से तो शनिवार, इतवार की छुट्टी है!

हफ़्ते भर की किचकिच के बाद शनि-रवि कहाँ चले जाते हैं इसका पता ही नहीं रहता।

कोई नहीं। सोमवार को बुला लेंगे, चौधरी को बोल देता हूँ। दुबे ने तुरंत हल निकाला।

नित्य रूप से फिर सोमवार की सुबह हुई। ऑफ़िस पहुँचते-पहुँचते नियमित रूप से अनियमित की तरह थोड़ी देर हो ही गई। जल्दी से गाड़ी ऑफ़िस के पीछे के पार्किंग में डाल कर पीछे की सीढियों से ही तीसरी मंज़िल पर मेरी केबिन की ओर चढ़ना शुरू किया। सीढियाँ चढ़ते-चढ़ते देखा कि जगह-जगह पर मधुमक्खियाँ मरी हुई पड़ी हैं।

केबिन में पहुँचते ही कॉलबेल बजाई। प्यून को बुलाया और पूछा यह सीढ़ियों में इतनी सारी मधुमक्खियाँ क्यूँ पड़ी हुई हैं? क्या छत्ता गिरा दिया? प्यून ने जवाब देना उचित नहीं समझा। धीमे से बोला, खबर नहीं साहब। दुबे भाई को खबर। उन्हीं से पूछ लीजिएगा।

थोड़ी देर बाद दुबे ने केबिन में आते हुए:

गुड मॉर्निंग सर। आज तो बड़े साहब ने सुबह-सुबह ही बुला लिया था। उनका एक छोटा सा काम था। निपटा दिया। साहब खुश हो गए आप तक बात आने ही नहीं दी। साहब, ये कुछ इसी काम के बिल हैं। सर, जरा देख लेना ना। दुबे का यह अंदाज़ है। वह कुछ बोलने ही नहीं देता। मैं कुछ भी बोलता उससे पहले उसने बोला: साहेब, शनि-रवि छोटी बेटी आई थी। बोली पापा वॉटर पार्क जाना है। तो दो-दिन बेटी और जमाई के साथ वहाँ हो आए। फेमिली के साथ घूम आए। और सर क्या कुछ है नवीन में?"

दुबे भाई, वे बाहर मधुमक्खियाँ क्यों हैं, मरी हुई?

कहाँ साहब? मुझे तो पता ही नहीं है। एक मिनट फ़ोन करता हूँ। फ़ोन पर-

अरे! कान्हा- चौधरी को भेज तो। फ़ोन रखकर फिर से अपने एक से एक किस्से सुनाते हुए मधुमक्खी के छत्ते की तो वो बात ही नहीं निकाल रहा था। कहते हैं कि ब्राम्हण की जिह्वा पर सरस्वती विराजमान है। पर मुझे इसका अनुभव दुबे से ज्यादा और किसी से नहीं हुआ। वो बोलना शुरू करे तो आप बस उसे सुनते रहो। यही तो उसका राज़ था जिसके कारण वो बड़े साहब लोगों का चहेता था। हाँ वो जो कर सकता था वो मैं नहीं कर सकता। इसलिए बड़े साहब मुझसे ज़्यादा उससे खुश रहते थे।

चौधरी आया।

दुबे- अरे, ये मधुमक्खियाँ क्यूँ पड़ी हुई हैं?

चौधरी- मेरेकु क्या मालूम साब मैंने नहीं देखी।

तो क्या खबर रखता है? दुबे बिगड़ा।

अब इस चर्चा में पूरा दिन भी लगा दें तो भी इसका सुराग मिलने वाला नहीं था। इस सहज ज्ञान की अनुभूति मुझे रोज़-रोज़ के अनुभवों से हो गयी थी।

बात को वहीं खतम करके मैंने अपने काम पर ध्यान दिया। काम के बीच मैंने अपने ख़बरियों को इस बात का पता लगाने को कहा।

पर दिनभर मन एक ही सवाल पर अटका हुआ था?

छत्ता गया कहाँ? किसने गिरा दिया?

चौधरी कह रहा है कि छत्ते से मधुमक्खियाँ शुक्रवार को ही उड़ गई थीं। पर मुझे आज तक यह समझ में नहीं आ रहा है कि मधुमक्खियों को किसने बता दिया होगा कि कल तुम्हारे छत्ते पर हमला होने वाला है!

फ़लसफ़ा

मल्लिका मुखर्जी
सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कौन बताता मुझको दिल खिलता है चाहत की छाँवों में,
अगर न मिलते तुम तो जीवन उलझ गया होता दाँवों में!
तुमसे ही सीखा है मैंने शूलों की राहों पर चलना,
मौन सजाकर अपने मुख पर दीपक बन रातों में जलना।
बड़े जतन से बाग उगाए हों दिल के सूने आंगन में,
अगर उजड़ जाएँ पल भर में, फिर कैसे अंतर को छलना!
याद किया खिलती कलियों को, दर्द उठा जब जब पाँवों में,
अगर न मिलते तुम तो जीवन उलझ गया होता दाँवों में!
तुम से ही सीखा है मैंने लम्हों को हंसकर जी लेना,
'जीवन है चलता रहता है'-कहते-कहते विष पी लेना।
ख़ाक हुए क्यों सपने सारे, प्राणों में क्यों प्यास निरन्तर,
पूछे कोई तो चुपके से अपने होठों को सी लेना।
याद किया मैंने चन्दनवन, जलन उठी जब-जब घावों में,
अगर न मिलते तुम तो जीवन उलझ गया होता दाँवों में!
तुम से ही सीखी है मैंने, नयी-पुरानी बातें सारी,
आसां कैसे की जाती है, मुश्किल हो भारी से भारी।
अपना मान लिया था जिनको, हृदय हुआ गर उनसे घायल,
समझौता करते हैं कैसे, बन जाए गर नदिया खारी।
याद किया तट के दीपक को, रात कटी जब-जब नावों में,
अगर न मिलते तुम तो जीवन उलझ गया होता दाँवों में!

न्यू प्रकाश सर्कस

मल्लिका मुखर्जी,
सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अतीत में झाँककर जब भी देखती हूँ कोई न कोई घटना मानस पटल पर ऐसे उभरकर आती है कि मन फिर से उन लम्हों को अनुभूत करने लगता है। कोई मर्मभेदी घटना हो तो दिल में भारी तहलका मचा देती है। खासकर बचपन के या किशोरावस्था के दिन, जब हम दुनियादारी के गणित से बिलकुल अनजान होते हैं। वर्ष 1967-68 की बात है जब मैं सातवीं कक्षा की छात्रा थी और वड़ोदरा ज़िले के बाजवा गाँव की सेकंडरी स्कूल 'वाकळ विद्यालय' में पढ़ती थी। स्कूल से कुछ ही दूरी पर एक खुला मैदान था जहाँ बच्चे क्रिकेट या अन्य खेल खेलते। एक दिन स्कूल जाते मैंने देखा कि कुछ ट्रकों से वहाँ सामान उतारा जा रहा है। बड़ी जिज्ञासा हुई। ठंड का मौसम था। कुछ देर रुकी भी, पर समझ न आया। दूसरे दिन देखा तो उस मैदान में एक विशाल तम्बू लगाया जा रहा था और सामने तीन हाथी पाँव में ज़ंजीर बांधे खड़े थे। समझ में आ गया, कोई सर्कस आया था। स्कूल से लौटते हुए देखा तो सामने की ओर एक बड़ा गेट लग गया था, जिस पर लिखा था 'न्यू प्रकाश सर्कस'।

आज टेलीविज़न, मल्टीप्लेक्स,और इंटरनेट के ज़माने में सर्कस का मनोरंजन भले ही हाशिये पर पहुँच गया है, लेकिन उस ज़माने में बच्चों के लिए तो सर्कस सचमुच कौतूहल का विषय था और मनोरंजन का प्रमुख साधन भी था। बच्चों के लिए सर्कस देखना किसी एडवेंचर से कम नहीं होता था। बाजवा से नजदीक बड़ौदा (अब वड़ोदरा) शहर में जब भी सर्कस आता, हर माता-पिता अपने बच्चों को लेकर पहुँच जाते उस विशाल स्टेडियमनुमा तम्बू में! आज भी मुझे याद है कि पापा पहली बार हमें बड़ौदा शहर में 'द ग्रेट गोल्डन सर्कस' दिखाने ले गए थे। पापा ने हमारी टिकटें बिलकुल आगे वाली सीट की ली थी। विशालकाय गोल स्टेडियम में हम अपनी सीट पर बैठे। एक पंक्ति में सुन्दर परिधानों में सज्ज लडकियाँ आईं, प्रेक्षकों का अभिवादन किया, फिर एक के बाद एक खेल शुरू हुए। हैरत भरी नज़रों से मैं उसमें उपर टंगी हुई रस्सियों को देखने लगी थी। रस्सियों के नीचे डंडियाँ बंधी थी। कुछ झूले भी टंगे दिखे। रिंग को कमर पर घुमाना, एक साथ पांच गेंदों को क्रमबद्ध तरीके से उछालना, एक पंक्ति में बैलेंस रखते हुए खूब ऊँची-ऊँची सायकल चलाते

देखना अच्छा लगा था। रंग-बिरंगे चेहरे, नकली नाक लगाकर आए जोकर भी अच्छे लगे थे, पर उनका हँसाना उतना समझ में नहीं आया था।

जब कुछ युवा-युवतियाँ रस्सी या झूलों पर अपने करतब दिखाने लगे, मेरी साँस ही रुक गई थी, कहीं किसी का हाथ छूट गया तो? मुझे सर्कस के इस खेल से बहुत डर लग रहा था। कैसे तो झूल रहे थे, कलाबाज़ियां खा रहे थे! अंत में बारी बारी से जब वे कूदकर नीचे लगाए गए जाल पर आए और प्रेक्षकों का अभिवादन किया, तब जाकर दिल को राहत मिली थी। शेर, बाघ, भालू, हाथी जैसे प्राणी एक के बाद एक आने लगे तब मेरा डर और बढ़ने लगा था। एक व्यक्ति हाथ में चाबुक जैसा कुछ लेकर उनके पास खड़ा था, जिसके इशारे पर ये प्राणी अपने करतब दिखा रहे थे। शायद वो उनका ट्रेनर था। उस समय प्राणी भी सर्कस का मुख्य आकर्षण होते थे लेकिन मुझे इन प्राणियों से ही बहुत डर लगता था। मुझे हाथी के खेल देखना फिर भी अच्छा लगता था। पता नहीं क्यों मुझे बाघ, शेर और भालू से जितना डर लगता उतना विशालकाय हाथियों से नहीं लगता था। उनकी करुणामयी आँखें मुझे सदा आकर्षित करतीं। गाँव में कभी-कभी साधु लोग जब हाथी लेकर आते, हम बच्चे उसे देखने के लिए इकट्ठा होते।

इस बार तो हमारे गाँव में आया था 'न्यू प्रकाश सर्कस' जो पापा दिखाने वाले ही थे। पहले ही दिन स्कूल से घर जाते मैं कुछ हमउम्र छात्रों के साथ उस विशाल तम्बू के आगे रुकी और भीतर झाँकने की कोशिश की। प्रवेशद्वार के पास ही गोलाकार 'मौत का कुआं रचा गया था। जिसका व्यास लगभग 30 फीट का था। पास ही में एक विशालकाय पोस्टर था जिसमें एक आदमी को गोल घूमते हुए तेज़ गति से मौत के कुएँ में मोटरसायकिल चलाते दिखाया गया था। तंबू से सटकर बंधे तीन विशालकाय हाथियों को देखना बड़ा रोमांचकारी लग रहा था, पर उनके पैरों में बंधी ज़ंजीर जैसे दिल को चुभ रही थी!

दूसरे दिन स्कूल जाते फिर एक नज़र उन हाथियों पर गई। जो अपनी लम्बी सूंड हिला रहे थे और अपने पांवों को भी ऊपर नीचे कर रहे थे। लग रहा था जैसे पाँव से ज़ंजीर को हटाना चाहते हों। शाम होते होते मेरे क्लास रूम में अचानक उन हाथियों के चिंघाड़ने की आवाज़ें आने लगी। मेरा दिल धक् से रह गया। हमारे क्लास टीचर भी बाहर की ओर गए। कुछ देर में लौट आए। आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। स्कूल से छुट्टी होते ही हम बच्चे उस टेंट की और दौड़े। बहुत सारी भीड़ इकठ्ठा हुई थी उन हाथियों को घेरकर। मैं भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ी। जो दृश्य देखा वो आज पचास वर्ष के बाद भी मेरे मानसपटल पर अंकित है! तीनों हाथी जमीन पर पड़े तड़प रहे थे और लगातार चिंघाड़ रहे थे। सर्कस के मालिक और अन्य लोग भी खड़े उन हाथियों को शून्य आँखों से देखे जा रहे थे। मैंने कुछ पल उन्हें देखा और बड़ी मुश्किल से भीड़ को चीरते हुए बाहर आ गई। मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। मैं जानने की कोशिश करने लगी कि उन्हें क्या हुआ है? वहाँ उपस्थित लोगों की बातों से पता चला कि इन हाथियों ने दोपहर को गाँव की सीमा के बाहर स्थित एक छोटे-से तालाब का पानी पिया था, जहाँ उन्हें नहलाया गया। तालाब का ज़हरीला पानी पीने से उनके पेट में भयानक दर्द हो रहा था। डॉक्टर को भी बुलाया गया, उन्होंने बहुत कोशिश की पर कुछ नहीं कर पाए हैं। मेरी आँखें छलकने लगी। कैसे तो मैं घर पहुँची! घर जाकर मैंने माँ और पापा से कहा। पापा बहुत हताश हुए। वे तो हमें ये सर्कस दिखाने ले जाने वाले थे। उस रात हाथियों की चिंघाड़ से सारा गाँव रातभर जागता रहा होगा। मैं रो रही थी चुपके-चुपके, फिर कब आँख लग गई पता नहीं।

दूसरे दिन पापा भी उन हाथियों को देखने गए। सारा गाँव उमड़ रहा था, पर मेरी हिम्मत ही न हुई दुबारा जाने की। पापा ने आकर बताया कि इन हाथियों ने जिस तालाब का पानी पिया था उस तालाब में बाजवा से थोड़ी ही दूरी पर स्थित रसायन का निर्माण करने वाली एक इकाई से कुछ ज़हरीले औद्योगिक बहिस्रावी पदार्थ आ मिले थे। उस समय यह बात मुझे उतनी समझ में नहीं आई थी, पर बाद में पता चला कि अहमदाबाद-वड़ोदरा हाईवे के पास स्थित रसायन का निर्माण करने वाली उस इकाई से कुछ औद्योगिक बहिस्रावी पदार्थ जहरीले होते हुए भी खुले में ही बहा दिए जाते थे जो अब बाजवा स्थित एक बड़े से तालाब में पहुँचने लगे थे।

दो ही दिन में अति दर्दनाक पीड़ा को सहते हुए एक के बाद एक तीनों हाथियों की मौत हो गई। स्कूल जाते हुए हर बच्चा वहाँ कुछ पल के लिए ज़रूर रुकता। तीसरे हाथी की जब मौत हुई, हमारे क्लास टीचर ने अत्यंत दुःख के साथ यह

खबर हमें सुनाई। मुझे याद है, मेरे साथ-साथ क्लास में और कई छात्र भी रोने लगे। टीचर सब को सांत्वना देते रहे। उस दिन कोई पढ़ाई नहीं हुई। खबर ये भी मिली कि सर्कस के मालिक सदमे से बेहोश हो गए तो उनको अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। दो दिन के बाद उन्हें होश आया और तीसरे दिन से सर्कस के शो शुरू हुए, बिना हाथियों के। 'शो मस्ट गो ऑन' चरितार्थ हुआ। पापा फिर भी हमें ले गए 'न्यू प्रकाश सर्कस' दिखाने। मैंने वही डरने वाली मानसिकता लिए सर्कस देखा। जब प्राणियों के खेल शुरू हुए, बार-बार मुझे उन तीन हाथियों की दर्दनाक चिंघाड़ सुनाई देने लगी। जबरन मैंने पलकों पर ठहरे आँसुओं को रोक रखा था। कितने दिनों तक मुझे इन प्यारे हाथियों की दर्दनाक चिंघाड़ ने सोने नहीं दिया। आज भी जब कहीं हाथी दिखाई देता है, ज़मीन पर पड़े दर्द से तड़पते वो तीनों हाथी मेरी नज़र के सामने तादृश होते हैं।

हां ये ही है समानता

मनोज झा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

है सबकी यही तमन्ना, संविधान का भी है कहना,
मिले सबको समान अधिकार, बिना किसी भेद व्यवहार।
पर आँखें घूमती जिधर, आता कुछ अलग ही नज़र,
यहां तो समान होने की बात दूर है,
सामंजस्य तक नहीं कोई करना जानता।
क्या यही है समानता?

कोई नोटों के बोझ से दबा, कोई सिक्कों के लिए रोड पर खड़ा,
चीखता सड़कों पर, इधर से उधर,
ना धूप की फ़िकर , ना बारिश की सिहर,
रातें कटती सड़कों पर, दिन का ठिकाना इधर-उधर,
दौड़ती मोटरों के पीछे, ज़िंदा पुतलों के आगे,
खत्म हो जाते हैं रास्ते, फिर भी दो पल जीने के वास्ते,
सड़क पर फेंकी गई रोटियों को,
अमृत तुल्य है मानता।
क्या यही है समानता?

ये धरती किसी मानव की बनाई नहीं,
ये सागर किसी की अमानत नहीं,
माटी के नीचे और माटी के उपर,
कुदरत की सारी सजावट है,
ये किसी सल्तनत की करामात नहीं।

फिर क्यों कोई सौदागर, कृत्रिम धन के बल पर,
मालिक बन बैठा कुदरती उपहारों का,
क्यों हवा और पानी का भी, है कुछ खास हक़दार बन जाता,
क्या यही है समानता?

जनम किस घर में हो ये किसी के वश में नहीं।
नवजात शिशु को गर्भ चुनने की होती इजाज़त नहीं,
फिर क्यों धरती पर आते ही इतना बड़ा अंतर हो जाता,
राजसुख किसी को, कुपोषण का खंजर किसी को चुभ जाता।
अरे ओ मूढ़ मानव सुनो,
सच्ची समानता की बातें करो,
हक़दार हो, धरती पर आने वाला हर बच्चा,
धरा पर उपलब्ध नैसर्गिक सुविधाओं का,
थोड़ा अजीब लगेगा ये किस्सा,
मिट्टी, पानी, हवा, खनिज में, सबका हो बराबर का हिस्सा।
जन्मजात गरीबी मिट जाएगी,
जात, धर्म, ऊंच-नीच की खाई सिमट जाएगी,
तभी सच हो सकती है समानता।
हां ये ही है समानता।
हां ये ही है समानता।

चल रही हैं हवाएँ, पर साँसें महसूस नहीं

मृगेश नकुम

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

चल रही हैं हवाएँ, पर साँसें महसूस नहीं,
मीठे हैं अब भी पकवान, पर वो स्वाद नहीं
फूलों में खुशबू वही है, पर हमें नहीं आ रही।
जिस समंदर की लहरों से मन मचलता था, अब उनमें रेत ही रेत दिखे,
जिन यारों के साथ बचपन गुज़रा, अब उनसे दूरी अच्छी लगे।

पहले ज़माने के रंगों में रंग जाते थे हम, अब बेरंगी अच्छी लगे,
आती थी आखों में देखकर सबों को चमक, अब नहीं आती।
लगती थी ज़िंदगी पहले शोलों में धधकती सी, अब पानी सी लगे,
पेड़ों की लहराती डालियाँ और पत्ते लगते थे अपने, अब अजनबी से दिखें।

सफर में कितने ही मीलों के पत्थर गुज़रते गए,
दिखे कतने ही मोड़ राह चलते, सब एक से लगे।
कुछ देर चलते-चलते याद आया कि मिलना था किसी से
मंज़िल ढूंढते-ढूंढते फ़ुरसत में मन के आईने में खुद से मिले।

ईज़ी है ना

याशिका सिंगला
सुपुत्री श्री पवन सिंगला, हिंदी अधिकारी

ईज़ी है ना!
स्माइल करना, खुश दिखना, फ़िट इन होना,
हैप्पी गो लकी का टैग ले के घूमना।

पर पता है; अकेले में ना डर सा लगता है,
अकेलापन सा लगता है।

ईज़ी नहीं है
उन थॉट्स के साथ रहना,
जिनका पल-पल सिर्फ़ है कहना,
कि मैं वर्थलेस हूँ, अनइंपोर्टेंट हूँ, ओवरड्रेमेटिक हूँ।

ईज़ी नहीं है
इतने डार्क थॉट्स सहना,
आफ़्टरऑल रिवर की तरह था मुझे बहना।
लेकिन ये कोई अंजान मोड है,
जो रहा मेरे विलपावर को तोड़ है।

ऐसे ही बैठी थी, ख़्यालों ने पूछा मुझसे;
क्या तू इतनी स्ट्राँग है? क्या इस ज़िंदगी का ग़म सहा जाएगा तुझसे।

लाइक्स कम्पेयर किए हैं,
हर एक डी.एम. के रिप्लाइ के लिए इतना स्ट्रेस लिया है,
फ़्रस्ट्रेशन और एक्सट्रीम्स ऑफ़ इमोशन्स, उनको काफ़ी अच्छे से हाइड किया है।

इक दिन सोचा चलो कहीं चली जाती हूँ,
देखती हूँ, क्या किसी को याद आती हूँ।
वैसे भी इस दुनिया में मेरे सारे रिश्ते वन साइडेड हैं,
ऐसा क्यूँ लगता है, उन्हें सिर्फ़ मैं निभाती हूँ?

जब हँसती हूँ ना, गाल दुखते हैं मेरे।
14 प्लस आवर्स सोती रहती हूँ, उठने का मन नहीं करता सवेरे।

ड्रजरी करके वर्ड है एक, आज-कल वो लगता है रिलेटेबल।
आस-पास हर चीज़ इतनी डिस्टेंट है ना कि कभी-कभार,
आइ विश मेरी लाइफ़ पे बना सके एक ट्रैजिक फ़ेबल।

फिर एक दिन हुआ कुछ ऐसा, कि मेरी डायरी लग गयी मेरे दोस्त के हाथ,
आंसू के बीच में सारी बातें निकल आईं; काफ़ी कंफ़र्टिंग था उसका साथ।

ओवरथिंकिंग, पैरों को बार-बार हिलाना,
पागल नहीं हूँ मैं, फिर क्यों पड़ा साइकोलोजिस्ट के पास जाना।

काफ़ी ग्लान्सेज़ थीं, जजमेंट से भरी हुई
जो केवल चल रही थीं दिल के जिस्म पर चाकू की तरह, और मैं ज़रा डरी हुई।

टच मी नॉट जैसे मूड स्विंग्स मेरे, भारी भीड़ में लगते अंधेरे।
मैनियक नहीं हूँ मैं, काउंसलर से एप्रिहेंशन मेरे।

इक दिन बहुत-बहुत एगोनाइज़्ड थी मैं,
तब खींच के मुझे ले गए।
उस दिन ना जाने उस अंजान शख़्स को सब बता के,
लगा जैसे कुछ फ़िज़ूल थे आज तक के गिले।

रिलीफ़ वेन्स में दौड़ रहा था, वैलिडेशन मिला कि मैं नॉर्मल हूँ।
बस मेरी लाइफ़ का इमोटिव आस्पेक्ट थोड़ा अलग है;
उस दिन काफ़ी जान गई मैं।

थोड़े लाइफ़ हैबिट्स में रिफ़ॉर्म लाने पड़े,
हेल्प मांगने की हिम्मत जुटानी पड़ी,
पता था हैं कुछ लोग,
जो मज़ाक उड़ाएंगे,
इस भीड़ में लेकिन वेल-विशर्स ही काम आएँगे।

लॉकडाउन की शाम पर्यावरण के नाम

रवि कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

कोविड-19 के कारण देश में सर्वव्यापी लॉकडाउन दिनांक 23 मार्च को आरंभ हुआ जो कि बाद में कई चरणों में निरंतर बढ़ता ही गया। मैं अपनी इस रचना में लॉकडाउन क्यूँ, कब और कैसे, जैसे सवालों के बारे में नहीं लिखूंगा, अपितु उन पहलुओं को छूने का प्रयास करूंगा, जो मैंने इस अवधि में महसूस किये हैं।

सामान्यतः लॉकडाउन से पहले कार्यालय बंद होने के बाद सीधे घर आ जाना, खाना-पीना, टी.वी. देखना और इधर-उधर की बातें करके सो जाना और फिर अगली सुबह वही दिनचर्या और भागती-दौड़ती ज़िंदगी। लॉकडाउन के समय (चूंकि सभी कोविड-19 के कारण अपने घरों में बंद थे), मन में ये ख़्याल आया कि क्यूँ न एक बार संध्या के समय अपने अपार्टमेंट की छत पर चला जाए।

ख़्याल तो आया पर मन में एक सवाल भी आया कि छत पर जाना सही है क्या? ये सवाल तर्कसंगत भी था। मन को समझाते हुए मैंने कहा कि चलो एक बार चल के देखा जाए कि कैसा महसूस होता है। और फिर एक दिन कार्यालय से कार्य समाप्त करके संध्या के समय अपने अपार्टमेंट की छत पर गया। फिर चारों तरफ देखा, ऊपर खुला आसमान जहां पश्चिम की तरफ धीरे-धीरे सूर्य अस्त हो रहा था एवं हल्की-हल्की हवाएँ चल रही थीं। पक्षी झुंड में चहचहाते एवं उड़ते हुए अपने घोंसलों की तरफ जा रहे थे। न गाड़ियों के हॉर्न सुनाई दे रहे थे ,न ही व्यक्तियों का शोर, सिर्फ बड़ी-बड़ी ख़ामोश अट्टालिकाएँ चारों तरफ दिखाई दे रही थीं जहां लोग कोरोना वायरस की वजह से अपने घरों में कैद थे।

हरे-भरे एवं बड़े-बड़े पेड़ जो इन अट्टालिकाओं के बीच खड़े हैं, हवा के झोंकों के साथ इनकी टहनियाँ एवं पत्ते हिल रहे थे जो पर्यावरण को सुंदर और लयबद्ध बना रहे थे और इन अपार्टमेंट्स के बीच अपनी सुंदरता बिखेर रहे थे मानों कह रहे हों कि हे मानव, भले ही तुम इतने बड़े-बड़े भवनों का निर्माण कर लो पर शहरों की इस कृत्रिम दुनिया के बदले ये प्राकृतिक सौन्दर्य कहाँ से लाओगे। कहाँ से लाओगे ये हरा-भरा वातावरण और पक्षियों की चहचहाहट। और इस प्रकार मैं अपनी दिनचर्या में संध्या का समय छत पर बिताने लगा और छत पर कभी-कभार अपने 2-3 मित्रों के साथ भी जाने लगा, जहाँ से उनके साथ प्रकृति का आनंद कभी-कभी चाय की चुस्कियों के साथ लेने लगा।

धीरे-धीरे लॉकडाउन बढ़ने लगा और शहर की आबो-हवा भी धीरे-धीरे शुद्ध होने लगी, पेड़ पौधों की पत्तियाँ और हरी होने लगी, पक्षियों की चहचहाहट बढ़ने लगी। वातावरण पहले से अधिक रमणीय लगने लगा और मन को सुकून के कुछ पल मिल गए।

इस वायरस से सारा संसार लड़ रहा है और हम मनुष्य इसका समाधान ज़रूर ढूंढ लेंगे, परंतु क्या हम अपने पर्यावरण को बचाने का प्रयास कर रहे हैं? लॉकडाउन खत्म होने के बाद आइये, हम सब मिलकर फिर से अपने पर्यावरण की ज़िम्मेदारी लें ताकि हम अपनी आने वाले पीढ़ी को प्रदूषण रहित वातावरण दे सकें, जैसा कि हमें अपने पुरखों से मिला है।

कोविड-19 एवं लॉकडाउन के बाद एक बार फिर से पर्यावरण के लिए हमें अपनी आवाज़ बुलंद करनी होगी- कोरोना को हराना है, पर्यावरण को बचाना है।

ज़िंदगी

विद्या अय्यर
पर्यवेक्षक

ज़िंदगी के सफ़र को मैं,
हँसते-हँसते काटती रही।

रास्ते में बहुत सारी खुशियाँ बिखरी हुई थीं,
उनको मैं चुनती गई।
मुरझाने के बाद भी, मेरी सुवास की चर्चा है यहाँ,
बसंत तो क्या मैं पतझड़ में भी खिलती गई।

समय के साथ पता चला कि नहीं मिलती हमेशा खुशियाँ,
इसलिए खुश रहने के लिए दुख में भी मैं हँस के जीना सीख गई।

ये मुस्कान देख कर ऐसा कभी मत सोचना कि मैं कभी रोई नहीं।
पर आंसुओं को स्याही बना के शब्दों में व्यथा लिखती गई।
कोशिश तो बहुत की ज़िंदगी ने मुझे रुलाने की,
पर सवाल ज़िद का था और मैं हमेशा हँस के जीती रही।

पर अभी समझा ज़िंदगी तो सुहानी ही है
अब मैं अपने तरीके से जीती गई
लव यू जिंदगी।

21वीं सदी में गांधी जी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत की प्रासंगिकता

वीना यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

महात्मा गांधी जी न केवल भारत के बापू कहलाए अपितु वे पूरे विश्व में युग पुरुष के रूप में प्रसिद्ध हैं। गांधीजी ने विश्व को एकादश व्रत दिये, जिनका पालन कर एक साधारण व्यक्ति भी जीवन मूल्य को समझ सकता है। ये व्रत (1) सत्य, (2) अहिंसा, (3) ब्रह्मचर्य, (4) अस्तेय, (5) अपरिग्रह, (6) अस्वाद, (7) अभय, (8) अस्पृश्यता निवारण, (9) शरीर-श्रम, (10) सहिष्णुता और (11) स्वदेशी हैं। ये सभी व्रत मानवजाति के लिए हमेशा प्रासंगिक रहे हैं और हमेशा प्रासंगिक रहेंगे, क्योंकि वक्त की कसौटी पर ये हमेशा खरे उतरे हैं।

महात्मा गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन सिद्धांतों पर आधारित था। उनके प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं ;

1.सत्य : गांधी जी सत्य के बड़े आग्रही थे, वे सत्य को ईश्वर मानते थे। "सत्य के साथ मेरे प्रयोग" उनके द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध पुस्तक हैं।

2.अहिंसा : अहिंसा पर गांधी जी ने बड़ा सूक्ष्म विचार किया है। उनके अनुसार मन,वचन व शरीर से किसी को भी कष्ट देना हिंसा है। यहां तक कि बच्चों को डांटना, मारना और क्रोध करना भी उन्होंने हिंसा ही माना है।

3.ब्रह्मचर्य : जो मन, वचन और काया से इन्द्रियों को अपने वश में रखता है, वही ब्रह्मचारी है। जिसके मन में विकार नष्ट नहीं हुएहैं उसे पूरा ब्रह्मचारी नहीं कहा जा सकता।

4.अस्तेय (चोरी न करना) : उनके अनुसार दूसरे की चीज़ उसकी इजाज़त के बिना लेना चोरी है। अपनी कम से कम ज़रुरत से मनुष्य जितना ज़्यादा लेता है वह चोरी है।

5. अपरिग्रह : जिस प्रकार चोरी करना पाप है, उसी तरह ज़रुरत से ज़्यादा चीज़ों का संग्रह करना भी पाप है। इसलिए खाने की आवश्यक चीज़ें , कपड़े आदि आवश्यकता से ज़्यादा इकट्ठा करना अनुचित है। अस्तेय व अपरिग्रह मन की स्थितियाँ है। सबके लिए बारीकी से उनका पालन करना कठिन है। पर जैसे-जैसे

मनुष्य अपने शरीर की आवश्यकताएं घटाता जाएगा, वैसे-वैसे अस्तेय और अपरिग्रह की गहराई में पहुँच जाएगा।

6.प्रार्थना : महात्मा गाँधी को प्रार्थना में अटूट विश्वास था। दक्षिण अफ़्रीका में रहते समय ही उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना प्रारंभ कर दी थी। प्रार्थना का मूल अर्थ मांगना है । परन्तु गाँधी जी प्रार्थना का अर्थ ईश्वरीय स्तुति, भजन, कीर्तन, सत्संग, अध्यात्म और आत्मशुद्धि मानते थे।

7.स्वास्थ्य : महात्मा गाँधी ने आजीवन स्वास्थ्य की चिंता की। वे औषधियों के घोर विरोधी थे। उन्होंने कुने की जल चिकित्सा, जुष्ट की प्रकृति की और लौटो और साल्ट की शाकाहार आदि पुस्तकें पढ़कर उसमें बताए हुए नियमों का पालन किया।

इसके अतिरिक्त ट्रस्टीशिप, विकेंद्रीकरण, एकता, हृदय परिवर्तन आदि गांधीवाद के मूल सिद्धांत हैं।

ट्रस्टीशिप एक सामाजिक-आर्थिक दर्शन है जिसे गांधी जी द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह अमीर लोगों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा वे गरीब और असहाय लोगों की मदद कर सकें। यह सिद्धांत गांधी जी के आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है, जो कि थियोसोफिकल लिटरेचर और भगवद्गीता के अध्ययन से हुआ था। उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत ने भारतवर्ष को अंग्रेज़ों की दासता से मुक्ति दिलाई। उनका ट्रस्टीशिप का सिद्धांत भी बहुत महत्वपूर्ण और अनुकरणीय है। गांधी जी एक ऐसी समाज व्यवस्था चाहते थे जिसमें अहिंसा के लिए जगह न हो। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत इसके लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने अफ़्रीका में 1903 में ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। गांधी जी ने इसका आधार इशोपनिषद के प्रथम श्लोक को माना था जिसका अर्थ है "इस जगत में जो कुछ भी जीवन है, वह ईश्वर के नाम से त्याग करके तू यथाप्राप्त भोग कर, किसी के धन से मोह न कर"। उनके अनुसार जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपत्ति एकत्रित करता है, उसे केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके पर्याप्त संपत्ति का उपयोग करने का अधिकार है। शेष संपत्ति का प्रबंध उसे एक ट्रस्टी की हैसियत से, उसे धरोहर समझकर, समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए।

ट्रस्टीशिप (न्यासिता) आर्थिक समानता के लिए बहुत ही क्रांतिकारी सिद्धांत है। इसे बढ़ावा देने के लिए उन्होने द. अफ़्रीका में सन् 1886 से सन् 1901 तक भेंट में मिली सब चीज़ों के लिए ट्रस्ट बनाया और उन्हें लोकहित में प्रयोग किया। गांधी ने इंग्लैंड और द. अफ़्रीका प्रवास में शिद्दत से यह महसूस किया था कि

पूंजीवादी व्यवस्था ने किस तरह से एक तरफ़ उद्योगपतियों के पास अनाप-शनाप धन संपत्ति जमा कर दी थी और दूसरी तरफ़ मिल मजदूर दिन-रात कड़ी मेहनत करने के बावजूद दो जून की रोटी जुटाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। मशीनों ने किस तरह लोगों को बेरोजगार बना दिया था यह भी गांधी ने जगह जगह घूमते हुए महसूस किया था।

गांधी रूस की हिंसक क्रांति से भी कई कारणों से प्रभावित नहीं थे। हिंसा से अर्जित शक्ति अंततः किसी दूसरी हिंसा के रूप में सामने आती है, गांधी इस मान्यता के प्रबल समर्थक थे इसलिए वे पूंजीपतियों के साथ भी किसी किस्म की ज़ोरज़बरदस्ती के पक्षधर नहीं थे। ऐसी परिस्थितियों में जहां एक तरफ़ पूंजीवाद और दूसरी तरफ साम्यवाद गांधी को विकर्षित कर रहा था, इन दोनों से इतर किसी तीसरे रास्ते की तलाश करते हुए गांधी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया था जो गांधी के प्रिय नैतिक मूल्यों सत्य, अहिंसा और सादगी एवं सेवा आदि के परिपेक्ष्य में खरा उतरता था।

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत एक तरह से पूंजीवाद को पूरी तरह ध्वस्त किए बग़ैर उन्हीं लक्ष्यों की पूर्ति करता है जिसे साम्यवादी हिंसक रास्ते से अर्जित करना चाहते हैं। यह भी कह सकते हैं कि साम्यवादी जिस लक्ष्य को ज़ोर ज़बरदस्ती की पगडंडी से आनन-फानन में प्राप्त करने के पक्षधर हैं, वही लक्ष्य गांधी ट्रस्टीशिप के माध्यम से पूंजीपतियों को आध्यात्मिकता के सहारे समझा बुझाकर उनका हृदय परिवर्तन कर अर्जित करना चाहते हैं। ट्रस्टीशिप सिद्धांत एक तरह से ऐसा सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक कार्यक्रम है जिसमें एक साथ पूंजीवादी और साम्यवादी व्यवस्थाओं के दोष समाप्त कर एक प्रगतिशील समाज की रचना सम्भव है। ऐसे समाज में अमीर लोग अपनी अथाह धन सम्पत्ति का केवल एक छोटा हिस्सा ही ख़र्च करेंगे जो उनके सादगीपूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है। बाकी की अतिरिक्त आय और सम्पत्ति के लिए वे स्वेच्छा से ट्रस्टी की भूमिका निभाएंगे और उसे जनकल्याण के कार्यों पर वैसे ही ख़र्च करेंगे जैसे किसी सामान्य ट्रस्ट के ट्रस्टी करते हैं। इस सिद्धांत से उनका तात्पर्य था कि व्यक्ति अपनी मात्र उतनी ही संपत्ति के उपयोग का अधिकारी है, जितनी उसकी नित्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में ज़रूरी है। अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के बाद, शेष धन उसका नहीं, समाज का है और उस धन का वह मालिक नहीं अपितु मात्र संरक्षक है। जब समाज के अन्य व्यक्तियों को इस धन की आवश्यकता पड़े, तब धन के संरक्षक का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस धन को उनकी सहायता के लिए वितरित करे। उनका कहना था कि प्रत्येक को खाने के लिए राजसी भोग मिले और रहने को विशाल महल सुलभ हो, ऐसा नहीं कहता, परंतु प्रत्येक की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होना अनिवार्य है। आज के

परिवेश में देश में एवं समस्त विश्व में अमीर वर्ग और ग़रीब वर्ग के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। अतः इस बढ़ती दूरी को कम करना अति आवश्यक है। आज भारत में अमीर वर्ग जो कि जनसंख्या का लगभग 1% है वह लगभग 58.4% धन का स्वामी है और भारत की लगभग 80.7% धन-संपदा लगभग केवल 10% लोगों के पास है। इसी प्रकार विश्व की सबसे धनी 1% जनसंख्या 44% धन-संपत्ति की स्वामी है।

हालांकि प्रकृति की रचना ही ऐसी है कि सभी की क्षमता एक-सी नहीं हो सकती, इसलिए प्राकृतिक रूप से कुछ लोगों की कमाने की क्षमता अधिक होगी और दूसरों की कम। गांधी जी कहते हैं कि मैं बुद्धिवादी व्यक्तियों को अधिक कमाने दूँगा, उनकी बुद्धि को कुंठित नहीं करूंगा, परंतु उनकी अधिकांश कमाई राज्य की भलाई के लिए वैसे ही काम आनी चाहिए, जैसे पिता के सभी कमाऊ बेटों की आमदनी परिवार के कोष में जमा होती है। वे अपनी कमाई के संरक्षक बन कर नहीं रहेंगे। हमारे भारतवर्ष में जहां लगभग 14.9% जनसंख्या कुपोषण की शिकार है, लगभग 7000 लोग प्रतिदिन भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं। लगभग 25 लाख प्रत्येक वर्ष भूख के कारण मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं, वहीं दूसरी ओर भारत में कुछ लोग इतने धनी हैं कि उनकी गणना विश्व के धनीवर्ग में होती है। इसी तरह विश्व में 8.21 अरब जनसंख्या को प्रतिदिन भरपेट भोजन नहीं मिल पा रहा। दुनिया में 09 में से 01 व्यक्ति हर रात को भूखा सोने को मजबूर है तो दूसरी ओर धनीवर्ग के मात्र कुछ लोगों के पास अथाह संपत्ति है। अतः ऐसे परिवेश में यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि लोगों में ट्रस्टीशिप (न्यासिता) की भावना का विकास हो ताकि विश्व की समस्त मानव जाति का कल्याण हो। अतः ट्रस्टीशिप (न्यासिता) के सिद्धांत को व्यवहार में लाने की सख़्त आवश्यकता है। यह अमीर लोगों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा वे ग़रीब और असहाय लोगों की मदद कर सकें।

परोपकारिता का एक अनुकरणीय उदाहरण जमशेद जी नुसरवानजी टाटा का है। समाज को वापस देने का दर्शन/विचार जमशेदजी नुसरवानजी टाटा की ही विरासत है, जो स्वर्ण-हृदयी उद्यमी थे।

टाटा ट्रस्ट की उत्पत्ति जमशेद जी नुसरवानजी टाटा, जो कि एक अग्रणी देश भक्त तथा परोपकारी व्यक्ति थे, उनकी असाधारण मानवीय सोच का नतीजा है।

देशप्रेम ने उन्हें 1892 में उच्च शिक्षा छात्रवृति आरंभ करने के लिए प्रेरित किया। जमशेद जी नुसरवानजी ने अपनी व्यक्तिगत संपति में से 30 लाख रुपए (संपत्ति का लगभग आधा भाग) के साथ भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु की स्थापना में सहायता की, जिससे भारत के दो अग्रणी वैज्ञानिक, नोबेल पुरस्कार विजेता

सी.वी.रमन, होमी जे.भाभा, विक्रम साराभाई तथा भारत रत्न सी.एन.राव निकटता से जुड़े रह चुके हैं।

परोपकार की इस भावना का संचरण उनके पुत्रों दोराबजी तथा रतन टाटा में भी हुआ तथा उनकी संपत्ति में से भी रतन जी टाटा ट्रस्ट तथा दोराबजी टाटा ट्रस्ट की स्थापना की गई। दोराबजी टाटा की पत्नी की स्मृति में लेडी टाटा मैमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की गयी। इन ट्रस्टों के माध्यम से महिला उत्थान, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक योगदान दिए गए। परोपकारिता का अनुमान इस तथ्य द्वारा लगाया जा सकता है कि टाटा सन्स की कुल संपत्ति की दो–तिहाई हिस्सेदारी इन ट्रस्टों में निहित है। अगर उनसे प्रेरणा लेकर हमारे देश का प्रत्येक उद्यमी स्वयं को परोपकार के लिए अग्रसर कर सके तो निश्चित ही हमारे समाज की बहुत उन्नति होगी।

आज दुनिया के किसी भी देश में शांति मार्च का निकलना हो अथवा अत्याचार व हिंसा का विरोध करना हो, या हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जाना हो, ऐसे सभी अवसरों पर पूरी दुनिया को गांधीजी की याद आज भी आती है और हमेशा आती रहेगी। हमें व्यक्तिगत स्तर पर मन में परोपकार की भावना को रखते हुए अपने आस-पास के ज़रुरतमंद लोगों की हर संभव मदद करनी चाहिये। समाज केवल उन्हीं व्यक्तियों का स्मरण करता है जिन्होंने समाज के कल्याण के लिए कुछ कार्य किया हो, सिर्फ़ परोपकार ही किसी व्यक्ति को महान बनाता है। आजकल टेलीविज़न में यूनिसेफ़ द्वारा दर्शकों से नवजात शिशुओं को चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के लिए रु 808 की सहायता राशि मांग का एक विज्ञापन दिखाया जाता है। इस सहायता राशि की तरह ही कई उदाहरण हैं जिनके ज़रिये

हम वैयक्तिक स्तर पर समाज को वापस कुछ दे सकते हैं। अगर कोई सक्षम व्यक्ति ऐसा कोई कार्य मानवता की रक्षा के लिए करता है, तो उसे न केवल आनंद आएगा बल्कि उसे संतुष्टि भी होगी। अत: यह कहने में कोई हर्ज़ नहीं कि गांधीजी, उनके विचार, उनके दर्शन तथा उनके सिद्धान्त कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा रहती दुनिया तक सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

न भेजो तुम वृद्धाश्रम

विश्वपति सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।
नौ माह गर्भ में रखकर माँ ने साँसों से साँस मिलाया था।
अपने सीने से चिपकाकर, अमृत पान कराया था।
खुद गीले पर सोकर, तुम्हें सूखे पर सुलाया था।
बुरी नज़र से बचने को काला टीका लगाया था।
इस ममतामयी, प्यारी माँ पर, कुछ तो करो रहम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

पिता ने तुम्हें स्कूलों के, गलियारों में छोड़ा था।
पढ़-लिखकर तुम बड़ा बनो, यह सपना संजोया था।
तुम्हें खुश रखने के लिए, मनचाहा खिलौना दिया था।
जब तुम्हें नींद आए तब, पेट पर सुलाया था।
तुम इस तपस्वी पिता को, याद रखो हरदम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

तुम घुटनों पर चलते-चलते, अपने पैरों पर खड़े हुए।
माँ-पिता की छत्र-छाया में, न जाने कब बड़े हुए।
तुमने अपने माता-पिता के, सपनों को साकार किया।
लेकिन उनकी आशाओं को, तुमने नहीं आकार दिया।
उन बूढ़े माता-पिता की आशाओं को तोड़ दिया।

बुढ़ापे में उनको तुमने, वृद्धाश्रम में छोड़ दिया।
तुम अपने माता-पिता पर प्रेम करो अर्पण।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

तुम भूल गए माँ के उस, काजल वाले टीके को।
तुम भूल गए अपने पिता के, जीने के सलीके को।
तुम भूल गए माँ की उन लोरी वाली रातों को।
तुम भूल गए प्यारे पिता की, प्यारी-प्यारी बातों को।
तुम भूल गए अपनी माता की भावना एवं समर्पण को।
तुम भूल गए अपने पिता के, साधन एवं मार्गदर्शन को।
तुम अपने माता-पिता को, याद करो हरदम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

शहरों की दौड़ लगायी वृद्धाश्रम की खोज में,
बिस्तर खाली नहीं मिला, आधुनिकता की होड़ में।
अलग-अलग वृद्धाश्रम में, बिस्तर की हुई व्यवस्था है।
सभी आशाएँ चूर हो गईं, यह कैसी अवस्था है।
जो जीवन भर साथ रहे, बेटे ने उनको जुदा किया।
माँ को पूरब, पिता को पश्चिम, आनंदित हो विदा किया।
बिछड़ गए दो जीवनसाथी, बुढ़ापे की मार से।
निकाल दिये गए अपनों द्वारा, अपने ही मकान से।
अपने इस व्यवहार पर, कुछ तो करो शरम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

बेटा-बहू, पोता-पोती, घर में खुशियाँ मनाते हैं।
जीवित भगवान को बाहर कर, कुत्तों को साथ सुलाते हैं।
माँ-पिता की अँखियाँ पथराईं, बेटे के दर्शन पाने को।
कभी बेटे ने सोचा भी नहीं, वृद्धाश्रम में आने को।
वृद्धाश्रम के खर्च का ऑनलाइन भुगतान करता है।
इसे वह अपना परम धर्म समझता है।
तब भी प्यार माँ का उमड़-उमड़ पड़ता है।
बेटे के दर्शन के लिए, माँ का दिल तड़पता है।
पिता भी पोता-पोती की झलक को तरसते हैं।
विवशता के कारण फफक-फफक रो पड़ते हैं ।
इस कुचक्र से तुम भी, बच नहीं पाओगे।
अपनों द्वारा तुम भी, यूं ही सताए जाओगे।
जिसने तुम्हारे लिए, अपने जीवन का किया हवन।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

माँ-पिता से बढ़कर, कोई भगवान नहीं होता।
इनकी सेवा से बढ़कर, कोई धाम नहीं होता।
इनमें निहित है आस्था, प्रेम और ममता की परिभाषा।
इनमें संचित है शक्ति, संबल एवं विश्वास की भाषा।
वृद्धाश्रम में नहीं भेजने का लेना आज संकल्प है।
माँ-पिता का दूजा कोई, होता नहीं विकल्प है ।
इसलिए कहता हूँ दोस्तों,
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।
अपने इन भगवान को, न भेजो तुम वृद्धाश्रम।

छोटा मुंह बड़ी बात

शिवानन्द,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मेरे अन्दर अपने वरिष्ठों के प्रति सम्मान का भाव कूट-कूट कर भरा है, वैसे आमतौर पर ऐसा नहीं होता है पर यह बात मैं अपनी पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ। इस सम्मान-भाव ने ही मुझे इस लेख को लिखने का श्रेय अपने वरिष्ठों को देने के लिए बाध्य कर दिया। यहाँ पर मेरे वरिष्ठ कहने का आशय मेरे परिवार के वरिष्ठ सदस्यों, मेरे गाँव-समाज के वरिष्ठजनों, कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों /कर्मचारियों आदि सभी से है जिनके सहयोग से मैं यहाँ तक पहुंचा हूँ क्योंकि अब ये कहना तो उचित नहीं होगा कि जिनके सहयोग से मैं केवल यहीं तक पहुंचा हूँ।

इस लेख को लिखने का श्रेय मैं अपने वरिष्ठों को इसलिए भी दे पा रहा हूँ क्योंकि अभी मेरे पास ऐसा करने का विकल्प है। ज़्यादातर लेखक अपनी कृतियों का श्रेय अपनी पत्नी, माता-पिता, गुरुजनों, पुत्र एवं पुत्रियों को देते हैं। यहाँ पर श्रेय लेने के क्रम में पत्नी का नाम सबसे आगे करने का भी कारण है। हुआ कुछ यूँ कि एक दिन कार्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों के वर्गीकरण का कार्य चल रहा था। इस दौरान पुस्तकों की विधा का पता करने के लिए सभी पुस्तकों के प्रथम दो-तीन पृष्ठों को पढ़ना पड़ रहा था। इस दौरान मैंने देखा कि लगभग अस्सी प्रतिशत लेखक अपनी कृतियों को लिखने का श्रेय या यूँ कहें कि अपनी सारी मेहनत एक लाइन में अपनी पत्नी को समर्पित किये हुए थे। यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी क्योंकि मैं अपने देश और कार्यालय में देखता हूँ कि लोग दूसरों द्वारा किये गए कार्यों का श्रेय भी लेने से नहीं चूकते और ये महाशय आखिर पुस्तक लिखने का श्रेय खुद क्यों नहीं लेते ।

मैंने अपने कौतूहल को शांत करने के लिए अपने एक मित्र से इसका कारण पूछ लिया कि आखिर लोग इतनी मेहनत करके मोटी-मोटी किताबें लिखते हैं और इसका श्रेय खुद लेने के बजाय अपनी पत्नी या अन्य लोगों को क्यूँ दे-देते हैं। उन्होंने अपने अनुभव से मुझे बताया कि शादी होने के बाद आदमी जितना भी अच्छा कार्य करता है उसका सारा श्रेय उसकी पत्नी ले लेती है और यदि गलती से भी कोई गलत कार्य कर देता है तो उसका सारा श्रेय उसे जबरन दे दिया जाता है। ये कहाँ तक सत्य है इसका फैसला पाठकगण ही करें तो अच्छा है|

अब मैं अपने इस लेख के मुख्य विषय पर आता हूँ। “छोटा मुंह बड़ी बात” एक हिंदी मुहावरा है जिसका अर्थ होता है अपनी हैसियत से बढ़कर बात करना। मैं

बचपन से ही इस मुहावरे के प्रकोप से ग्रसित रहा हूँ और आज तक ग्रसित हूँ। मैं अपने सभी भाई-बहनों में सबसे छोटा हूँ इसलिए बचपन में जब कभी भी अग्रजों को कोई बुद्धिमानी भरी सलाह देने की कोशिश करता था तो वे मेरा इस तरह उपहास करते थे मानो मैं कभी सही बात बोल ही नहीं सकता, इसलिए मुझे इस मुहावरे से ही चिढ़-सी हो गई है। क्या कभी आपसे छोटा व्यक्ति आपसे अधिक समझदारी वाली बात नहीं कर सकता? क्या केवल आयु या पद में छोटा होने से यह साबित हो जाता है कि अमुक व्यक्ति कभी भी कोई औचित्यपूर्ण बात नहीं कह सकता? मैंने देखा है कि लोग अपने बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार विषय चयन करने की अनुमति केवल यह कहकर नहीं देते कि तुम्हें नहीं पता कि क्या तुम्हारे लिए सही है, तुम अभी बच्चे हो। आज भी किसी साहित्यप्रेमी बालक को जबरन विज्ञान पढ़ने के लिए बाध्य कर दिया जाता है। बच्चों के माता-पिता यह सोचते हैं कि स्ट्रीम चयन करने की समझ बालक में हो ही नहीं सकती। यद्यपि वर्तमान में लोग अपने बच्चों को पेशे का चुनाव करने के लिए छूट दे रहे हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बहुत सुधार की आवश्यकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें प्रत्येक व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए और अगर वे विचारपरक लगें तो अनुसरण करने में भी कोई हर्ज़ नहीं। हमें पहले से ही किसी के प्रति पूर्वाग्रह नहीं बनाना चाहिए कि मैं श्रेष्ठ हूँ और मुझे किसी की बात सुननी ही नहीं है।

ज़िंदगी की तलाश में

सुनीता शॉ
बहु-कार्य कर्मचारी

हर इंसान की ज़िंदगी में एक ऐसा वक्त आता है जब वह सही-गलत, सच-झूठ के मध्य अंतर नहीं कर पाता। तब उसे इस सामाजिक-चक्र का रहस्य समझ नहीं आता और फिर शुरू होती है ज़िंदगी की तलाश। क्या है ये ज़िंदगी? क्यों लोग आते हैं और चले जाते हैं? और हमारा इस दुनिया में आने का क्या लक्ष्य है?

आज हम जीते नहीं, बल्कि एक भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी के संचालक बन चुके हैं। कभी बचपन में पहले नंबर पर आने की प्रतिस्पर्धा थी, तो आज सफल होकर अपने गंतव्य तक पहुँचने की दौड़ में लगे हैं। यह सब कुछ हम खुद के लिए करते हैं पर ज़िंदगी तो हमारे लिए कुछ और ही योजना बनाये होती है।

हम चाहे जितना भी आगे बढ़ जाएँ, ऊंचाइयों को छू लें, पर फिर भी हम खुश नहीं रह पाते। क्योंकि हम चाहे जिस स्तर पर भी हों, हमें वो सब कुछ नहीं मिलता जो सब कुछ पाने की हम कामना रखते हैं। संक्षेप में, हमें आत्मसंतुष्टि नहीं मिल पाती। मनुष्य का यह स्वभाव रहा है कि वह हमेशा कुछ पाने की या हासिल करने की सोचता है, जबकि हमें तो ज़िंदगी खुद से ज़्यादा दूसरे के संघर्ष में अपना योगदान देने के लिए मिली है। एक सफल व्यक्ति के पीछे उस इंसान की मेहनत के साथ-साथ और बहुत सारे लोगों का सहयोग छिपा होता है। एक संगीतकार को भी प्रेरणा की आवश्यकता होती है तभी वह एक बेहतरीन संगीत की रचना करने में सफल हो पाता है और यह प्रेरणा उसे कोई दूसरा व्यक्ति ही दे सकता है। शायद इसलिए मनुष्य एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है क्योंकि हर मनुष्य दूसरे के सहयोग के बिना आगे नहीं बढ़ सकता है।

अंत में इन सभी बातों का सारांश करते हुए यही कह सकते हैं कि ज़िंदगी अपने आप में बहुत बेहतरीन है लेकिन इसमें हम कोई और ही रंग भर देते हैं। हर एक के अंदर ही यह विशेष गुण होता है कि वह चाहे तो कई और लोगों की ज़िंदगी संवार दे। इसलिए कभी किसी की मदद से पीछे नहीं हटें। क्या पता आपका बढ़ाया हुआ एक हाथ बहुत लोगों का हौसला बन जाए और भगवान बहुत सारी ज़िंदगियाँ संवार दे। ज़िंदगी के असल मायने यही हैं और उसकी असली पहचान भी यही है।

"चलती है ज़िंदगी पवन की तरह,

हर मोड़ पर मिलती है कभी धूप तो कभी छाँव,
कभी आशा की लहर दौड़ती है,
तो कभी निराशा के बादल घिर जाते हैं।
पर हर रात के बाद सवेरा होता है,
हर बादल के पीछे किसी का सूरज छुपा होता है।

पहला प्यार

सुनील कुमार छेडवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बहने लगी जब बसंती बयार,
तो याद आया मुझको वो पहला प्यार,

याद आया कि कितनी ज़ोर से धड़का था ये मेरा दिल,
जब नज़रें मिली थीं तुमसे पहली बार,
यूँ ही छत पर बैठा था मैं- और तुम गुज़रीं थीं मेरी गली से,
बारिशों के मौसम थे- काली घटा आसमां पे छाई थी,
बारिश की एक बूंद गिरी थी- जब आसमां से
उस ही पल– हम दोनों की नज़रें टकराई थीं,

अजीब सी कशिश थी- उस रौशन चेहरे में,
मासूमियत भरी आँखों से- तुम फिर शरमाई थीं,
बड़ी मुश्किल से संभाला था- मैंने खुद को,
खुदा गवाह है- मेरी तो जान पर ही बन आई थी,
उन नीली आँखों का जादू- मैं भूल नहीं सकता एक पल भी,
उस पल में ये सारी दुनिया - जैसे हो गई थी ओझल सी,
हल्की सी नज़रें उठाकर- देखा था तुमने मुझे,
उस इक दीदार से ऐ यार मेरे, मेरी धड़कनें हो गई थीं पागल सी,

ठंडी हवाओं ने जब- तेरी घनी जुल्फों को लहराया था,
कैसे बयां करूँ- हालत इस दिल की,
उस पल ने- कैसा कहर ढाया था,
इश्क आसां नहीं है- कहता है क्यूँ ज़माना- ये तभी समझ आया था,

उस पल में- ठहर जाए ये दुनिया,
इस दिल की- बस यही ख़्वाहिश थी,
जी चाहता था कि भीगता रहूँ- मैं ज़िंदगी भर उसमें,
वो जो तेरे- प्यार की बारिश थी,

नज़रों से नज़रें मिलने का वो जादू था- मुझपे पहली बार हुआ,
ज़मीं नाचने लगी थी मेरी- बादलों पे ये दिल सवार हुआ,
हवाएँ महकने लगी थीं- गीत गूँजते थे फिज़ाओं में,
तुमसे ही यार मेरे- मुझे पहला प्यार हुआ,
लफ़्ज़ आँखों से बयां हुए तुम्हारी,
कि धड़कनों ने मेरी- तेरी धड़कनों को छुआ था,
मासूम सी आँखें- कह रही थीं तुम्हारी,
कि प्यार तुमको भी पहली बार हुआ था।

सिक्का

हर्षित पांडे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

यह घटना मेरे साथ तो नहीं घटी मगर जिसके साथ घटी थी उसने मुझे स्वयं बताई थी। यह घटना एक मौलिक रचना के तौर पर कार्यालय की हिन्दी पत्रिका में प्रस्तुत करने की सलाह भी मैंने उक्त व्यक्ति को, जिन्हें आप मेरा मित्र कह सकते हैं, दी थी। उन्होंने मेरी सलाह का अनुसरण किया अथवा नहीं इस बात की जानकारी मुझे नहीं है। घटना इस प्रकार है:

मेरे एक हिन्दीभाषी मित्र जीवन में पहली बार अपना गृहनगर छोड़कर गुजरात आए थे। कारण था अहमदाबाद स्थित प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय में लेखापरीक्षक के पद पर नियुक्ति। राजकीय सेवा में पहली बार नियुक्ति के समय अभ्यर्थी को सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा जारी एक मेडिकल प्रमाणपत्र नियोक्ता कार्यालय में प्रस्तुत करना होता है जिसमें दर्ज हो कि उक्त अभ्यर्थी को ऐसी कोई चिकित्सीय दुर्बलता नहीं है,जिससे उसे सरकारी सेवा के अयोग्य समझा जाए। मेरे उक्त मित्र द्वारा भी ऐसा ही एक प्रमाणपत्र, जो उनके गृहनगर के सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी किया गया था, नियुक्ति हेतु प्रशासन अनुभाग में प्रस्तुत किया गया। उक्त प्रमाणपत्र में सक्षम प्राधिकारी के हस्ताक्षर के साथ उसकी मुहर (seal) लगी हुई नहीं थी। गुजराती भाषा में मुहर को सिक्का कहते हैं जिसकी जानकारी मेरे मित्र को नहीं थी। मेडिकल प्रमाणपत्र को देख कर प्रशासन अनुभाग के सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी महोदय द्वारा कहा गया कि प्रमाणपत्र में सिक्का नहीं है। बिना सिक्के के प्रमाणपत्र को कैसे मान्य समझा जाए। मेरे मित्र को बार-बार प्रयुक्त होने वाले शब्द 'सिक्के' का अर्थ समझ में नहीं आया। उसे यह समझ में आया कि 'सिक्के' का न होना ऐसी कौन सी तकलीफ़देह बात है। सिक्का तो सभी की जेब में होता है। यह सोचकर उसने जेब से पाँच रुपए का सिक्का निकाला और सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी महोदय को देकर कहा, ये लीजिये सर 'सिक्का'!

कार्यालय में आयोजित रंगोली प्रतियोगिता और "जॉय ऑफ़ गिविंग" कार्यक्रम की एक झलक

पवन सिंगला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं
शिवानंद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कार्यालय में रंगोली प्रतियोगिता : समूह में रंगोली बनाने से एक साथ मिलकर कार्य करने की प्रेरणा मिलती है| रंगोली की महत्ता को देखते हुए एल & आर क्लब द्वारा वर्ष 2019 में दीपावली और गुजराती नव-वर्ष के स्वागत में ऑडिट भवन में दिनांक:24.10.2019 को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता हेतु कुल **08** ग्रुप बनाए गए। इनमें प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं

राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), गुजरात, अहमदाबाद, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद और महालेखाकार (लेखा एवं हक़.), गुजरात, शाखा: अहमदाबाद के कार्यालय-सदस्यों ने भाग लिया। सभी सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लिया और अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए अनेक मनोहारी रंगोलियाँ बनाईं। तीन सर्वश्रेष्ठ रंगोलियों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

जॉय ऑफ़ गिविंग:- गुजरात राज्य में दीपावली एवं गुजराती नव-वर्ष के दौरान सभी लोग अपने घरों, दफ्तरों, आदि जगहों पर सहायकों एवं कर्मचारियों को उपहार, मिठाई आदि भेंट करते हैं। इसी क्रम में प्रतिवर्ष ऑडिट भवन स्थित

संयुक्त कार्यालयों द्वारा ऑडिट भवन में कार्यरत संविदा कर्मचारियों को उपहार स्वरुप कुछ धनराशि दी जाती रही है। वर्ष 2019 में कार्यालय में "जॉय ऑफ़ गिविंग" कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सभी ने योगदान किया। प्राप्त सहयोग राशि से कार्यालयों में कार्यरत प्रत्येक संविदा कर्मचारी को उपहार प्रदान किए गए।

प्रीति भोज : स्थानीय नववर्ष के अवसर पर कार्यालय के बहु-कार्य कर्मचारियों के सम्मान में कार्यालय में दिनांक: 08.11.2019 को एक प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी उच्च-अधिकारियों ने मिलकर सभी बहु-कार्य कर्मचारियों को भोजन कराया। प्रधान महालेखाकार महोदय स्वयं इस प्रीति-भोज में शामिल हुए और इसमें अपना व्यक्तिगत सहयोग दिया।

कार्यालय में आयोजित की गई पोस्टर प्रतियोगिता के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, अहमदाबाद के सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागी प्रधान महालेखाकार महोदय के साथ

हिन्दी पखवाड़ा 2019 के समापन समारोह के दौरान ऑडिटोरियम में उपस्थित कार्यालय सदस्य

मुकेश के नग़मे

एच.के.धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

कुछ समय पहले टीवी पर एक धारावाहिक चल रहा था, नाम था चिड़ियाघर। जैसा नाम था वैसे ही उसके किरदार थे, घर का मालिक केसरी यानी शेर। उसका बड़ा बेटा था घोटक और छोटा गोमुख!

घर का मुखिया केसरी हर एपिसोड में अपने परिवार को कुछ न कुछ संदेश देता है और सुखी जीवन जीने का राज़ बताता है। एक बार घोटक अपने पिताजी से सवाल करता है, आप हमेशा ऐसी शांति कैसे बनाए रखते हैं और कभी गुस्सा भी नहीं होते? यह समझ आप में कहाँ से आई?

मुझे लगा, मास्टर केसरी उसका कोई गहन पांडित्य-पूर्ण या दार्शनिक उत्तर देंगे, लेकिन वे बड़ी सहजता से बोले, "मुकेश के गाने सुनकर!"

27 अगस्त, मुकेश की पुण्यतिथि है। 53 साल की कम उम्र में उन्होंने विदेश में एक शो के दरम्यान हमसे विदा ली लेकिन आज भी वे अपने नग़मों में हमारे बीच ज़िंदा हैं।

मुकेश के पास न तो रफ़ी जैसी सुर की परख थी, न ही मन्ना डे जैसा स्वरों का शुद्ध प्रयोग। उनके गीतों में किशोर कुमार की नटखट, चुलबुली मस्ती भी नहीं है, लेकिन मुकेश हम में से ही एक लगते हैं। ऐसा महसूस होता है जैसे हमारे जैसा ही कोई गा रहा है।

पाठशाला जीवन में, नौवीं कक्षा में एक बार देशभक्ति के गानों की प्रतियोगिता हुई। हम लोगों ने चुना, हम हिंदुस्तानी... मुकेश की आवाज़ मे बड़ा सुहाना गाना। हमें दूसरा पारितोषिक मिला। उन दिनों , मैं मुकेश और रफ़ी का बहुत बड़ा चाहक हुआ करता था। अंताक्षरी में अक्सर मुकेश या रफ़ी के नग़मे गाता। उसमें भी मुकेश के दर्द भरे गानों में लगातार मेरी यह कोशिश रहती कि अपनी आवाज़ में वही दर्द या उदासी भर दूं। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब 'ह' से गाना शुरू करना होता था तब ज़्यादातर नग़मे मुकेश के ही होते थे।

हम छोड़ चले हैं महफ़िल को...

हमसफ़र मेरे हमसफ़र...

हाँ दीवाना हूँ मैं...

हमने तुझ को प्यार...

हम तो तेरे आशिक हैं ...

होठों पे सच्चाई रहती है, जहाँ दिल में सफ़ाई रहती है...

कितने ही गाने ऐसे होंगे जो हम सब ने कभी न कभी अंताक्षरी में ज़रूर गुनगुनाए होंगे ।

आवारा हूं ...

छलिया मेरा नाम ...

मेरा जूता है जापानी ...

आ लौट के आजा मेरे ...

जीना यहाँ मरना यहाँ ...

रुक जा ओ जाने वाली रुक जा ...

ये मेरा दीवानापन है ...

सजन रे झूठ मत बोलो ...

बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं ...

दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में......

ढेर सारे गीतों के शब्द आज भी मुझे याद हैं। वह इसलिए कि इन गीतों के शब्द बहुत सुंदर होते थे, सीधे दिल में बस जाते थे। कितने सुंदर शब्द होते थे, उनमें जीवन का यथार्थ स्वरूप दिखता था। कभी-कभी मैं सोचता हूं कि पुराने गीतकार इतने मनभावन गाने कैसे लिख लेते थे? शायद उनके पास जीवन के दर्द को देखने की और उसे अल्फ़ाज़ में ढालने की अद्‌भुत क्षमता थी। अपने आसपास समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा हो उसको बड़ी ही संजीदगी से वे देख सकते थे।

मुकेश के गाने कहीं न कहीं हमारे जीवन के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। प्रणय-भग्न हृदय के भाव को मुखरित करने में मुकेश का कोई सानी नहीं है।

मुबारक हो सबको समां ये सुहाना...

मुझे तुमसे कुछ भी न चाहिए...

तुम्हें ज़िन्दगी के उजाले मुबारक...

जिन्हें हम भूलना चाहें...

जो प्यार तूने मुझ को दिया था...

सजनवा बैरी हो गए हमार...

मैं तो हर मोड़ पर तुझ को...

कितने सारे गाने ऐसे हैं जो अक्सर प्रयोग में आते थे, जैसे मेरे बेटे को बचपन में रात में सुलाते वक्त प्रायः,

राम करे ऐसा हो जाए...

जब कोई दोस्त रूठ जाए या धोखा दे;

दोस्त दोस्त ना रहा...

जब कोई बेवकूफ़ बनाकर चला जाये!

सब कुछ सीखा हमने न सीखी होशियारी...

आईज़ोल ऑफिस की खिड़की से ढलते हुए सूरज को देखकर,

कहीं दूर जब दिन ढल जाये..

जब मन जीवन की परेशानियों से बहुत क्षुब्ध हो!

संसार है इक नदिया, सुख दुःख दो किनारे हैं ....

मुकेश ने कई गुजराती गाने भी गाए हैं। जब-जब ऐसा लगा कि तृष्णा बढ़ रही है और दिल को हरदम कुछ नया चाहिए तो,

पंखीडा ने आ पींजरू जूनूं ...

जब बचपन का साथी बिछड़ जाए तो,

ओ नील गगनना पंखेरू....

जब-जब मेरा तबादला हुआ है तो मैंने अक्सर यह गाना याद किया है।

चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला

तेरा मेला पीछे छूटा, राही चल अकेला।

कितने ही नग़मे ऐसे हैं जो मेरे लिए सदाबहार हैं। जैसे कि अनाड़ी फिल्म का यह क्लासिक गाना; शंकर जयकिशन का संगीत और शैलेंद्र के शब्द।

किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार,

किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार,

किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार,

जीना, शायद इसी का नाम है ...

गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री देवव्रत शास्त्री को लेखापरीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सौंपते हुए प्रधान महालेखाकार श्री एच. के. धर्मदर्शी

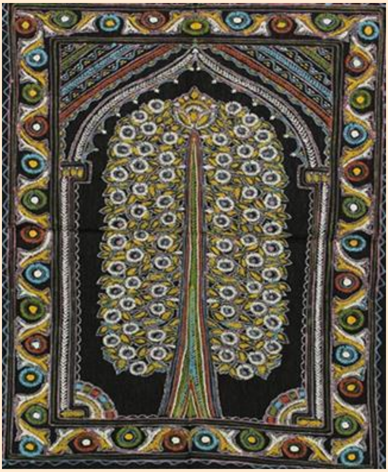

रोगन पेंटिंग

गुजरात के कच्छ ज़िले में मुख्यतः निरोणा गाँव में की जाने वाली रोगन पेंटिंग एक अनूठा शिल्प है। इस कला का कौशल बहुत ही कम परिवारों के कारीगरों के पास है। रोगन पेंटिंग में एक गाढ़े पेस्ट का उपयोग होता है जो कुसुम, अरंडी या अलसी के तेल को उबालकर और पानी में डालकर तैयार किया जाता है। इस पेस्ट को चॉक कलर पिगमेंट और एक बाइंडिंग एजेंट के साथ मिलाकर गाढ़ा डाई बनाया जाता है।

कपड़े पर पेंटिंग एक छड़ी या धातु के ब्लॉक का उपयोग करके की जाती है। अधिकतर ज्यामितीय और पुष्प के डिज़ाइन बनाए जाते हैं जिनमें सामान्यतः लाल, नीला और पीला रंग प्रयोग किया जाता है। रोगन पेंटिंग का उपयोग दीवार की सजावट, मेज़पोश, पर्दे, साड़ी आदि को सजाने के लिए किया जाता है।

भाद्रपद अंबाजी मेला

भाद्रपद मेला गुजरात-राजस्थान सीमा के पास बनासकांठा ज़िले के दांता तालुका में स्थित अंबाजी मंदिर, जो कि एक शक्ति पीठ भी है, में भाद्रपद मास (अगस्त-सितंबर के आसपास) की पूर्णिमा को आयोजित किया जाता है। मेले के दौरान बड़ी संख्या में लोग अंबाजी आते हैं जिनमें से बहुत लोग पैदल यात्रा करके आते हैं।

मेले में सप्तशती का पाठ होता है जिसमें अंबाजी की स्तुति में 700 श्लोक पढ़े जाते हैं। मेले में स्थानीय दुकानों के अलावा अस्थायी स्टॉलों में खाने-पीने के सामान, खिलौने, चित्र और मूर्तियां, ताबीज़, बांस के लेख आदि की बिक्री की जाती है। पूर्णिमा की रात को, भवाई लोकनाट्य का प्रदर्शन भी किया जाता है जिसमें पखावज और झांझ जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है।